Title-Code:- HARBIL01906

आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी की मासिक पत्रिका

अनुपमा यात्रा

SINCE 1970

वर्ष: 01/ संस्करण: 11/ पृष्ट: 08/ मूल्य: 5 रूपये | भिवानी, मंगलवार 10 अक्तूबर 2023 | anupama.express@ammh.ac.in

ऐसे जिएं कि जैसे आपको कल मरना है और सीखें ऐसे जैसे आपको हमेशा जीवित रहना है ।
-महात्मा गांधी

पुलिस वर्दी में रहते हुए इंसान बनना मुश्किल नहीं : डीजीपी अशोक गर्ग

हरियाणा की माटी के लाल व उत्तराखंड के डीजीपी अशोक गर्ग की पुस्तक खाकी में इंसान का भिवानी में विमोचन

भिवानी। हर व्यक्ति में यह भ्रम है कि खाकी में इंसान नहीं होता। इसे दूर करने के लिए मैंने अपने दिल से खाकी में इंसान पहली किताब लिखी। यह किताब मेरे मन में उठे द्वन्द्व की उपज है। जिसके माध्यम से मैं यह संदेश समाज को देना चाहता हूं कि पुलिस से डर केवल बदमाशों में होना चाहिए। आम आदमी के अंदर पुलिस को देखकर खुशी व महिलाओं में सुरक्षा का भाव आना चाहिए। यह बात उत्तराखंड के पुलिस महानिदेशक (डी0जी0पी0) अशोक गर्ग ने अपनी पुस्तक खाकी में इंसान के जनसंवाद एवं समीक्षा समारोह में कही। कार्यक्रम में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड सचिव, ज्योति मित्तल विशिष्ट अतिथि रही।

यहां आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित जनसंवाद एवं समीक्षा समारोह में प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला व अजय गुप्ता ने मुख्य अतिथि को बुके भेंट कर उनका स्वागत किया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने स्मृत्ति चिन्ह भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। अपने संबोधन में उत्तराखंड के डी0जी0पी0 अशोक गर्ग ने कहा कि पुलिस का मतलब चाय की दुकान पर सेटिंग व दलाली तंत्र का नहीं, अपितु जनता की सेवा का है। उन्होंने कहा कि देश का विकास तभी संभव है, जब पुलिस तंत्र देश के साथ जुड़ेगा। पुलिस की इमेज अंग्रेजों के समय से क्रांतिकारी आंदोलन को दबाने व कर वसूलने की रही है। जिसे आज बदलने की आवश्यकता है। उनकी इस पुस्तक में स्वयं अनुभवों के आधार पर गैंगरेप, भ्रष्टाचार, चोरी एवं डकैती से संबंधित 16 कहानियां है। जिसे उन्होंने दिमाग से नहीं अपने दिल से लिखा है। उन्होंने कहा कि यदि महिलाओं पर अत्याचार बढ़ रहे हैं, यह अगर सामने आ रहा है तो इसका कारण महिलाओं की जागरूकता है। यह एक सकारात्मक पहलू है। लोकतांत्रिक व राजनीतिक दबाव पर उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक देश में सेवा करना कोई मुश्किल कार्य नहीं। डी0जी0पी0 बोले, हिंदी मेरी राष्ट्र भाषा है। अंग्रेजी मुझे सीखनी पड़ी है। साथ ही उन्होंने अपनी अन्य किताबों पर प्रश्नों के उत्तर में हार्ड वर्क नहीं स्मार्ट वर्क, सिविल प्रतियोगिता की तैयारी, पुलिस स्तर राष्ट्रीय स्तर पर कैसे कार्य करें यह भी बताया।

उन्होंने कहा कि पुलिस के पास वर्दी, कानून एवं हथियार तीन गुणा शक्ति होती है। जिसका वह पूर्ण ईमानदारी व सत्यनिष्ठा से वहन करें। उन्होंने अपनी किताब के पन्नों को श्रोतागण के साथ सांझा किया, जिसे शहर से आए अतिथिगणों एवं प्रभुद्धजनों ने बड़ी आतुरता से सुना। कार्यक्रम में जनसंवाद के तहत पूछे गए प्रश्नों का उत्तर उन्होंने बड़े ही प्रभावी ढंग से दिया।

कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में आए शोधार्थियों के शोध पत्रों का सग्रंह संत साहित्य की प्रासंगिकता पुस्तक का विमोचन कुलपति प्रो. राजकुमार मित्तल ने किया। पुस्तक के संपादन में डॉ. मधुमालती व डॉ. रमाकांत शर्मा ने सहयोग दिया। सबल, काबिल व्यक्ति समाज को कुछ दे: प्रो0 राजकुमार मित्तल

कार्यक्रम अध्यक्ष चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय कुलपति प्रो0 राजकुमार मित्तल ने कार्यक्षमता, कौशल एवं चरित्र निर्माण पर बल देते हुए कहा कि यदि व्यक्ति सबल व काबिल है और समाज को कुछ दे सकता है तो उसे समाज को अवश्य देना चाहिए। हमें समाज के नकारात्मक पहलुओं को छोड़कर सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए।

समाज में परिवर्तन जागरूकता से संभव: बुवानीवाला

आदर्श महिला महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि समाज में परिवर्तन जागरूकता से संभव है। एक पुलिसवाला विपरीत परिस्थितियों में रहते हुए भी समाज में अपनी भूमिका अदा करता है। हमें अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का उचित ज्ञान होगा तब हम पुलिस द्वारा दी गई सुरक्षा का पूर्ण रूप से फायदा उठा पायेंगे। उन्होंने खाकी में इंसान किताब की प्रशंसा करते हुए महाविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद क्षेत्र के उत्कृष्ट प्रदर्शन से अवगत करवाया।

इन सबकी रही उपस्थिति

आदर्श शिक्षा समिति के अध्यक्ष अजय गुप्ता, वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरत्न गुप्ता, वैश्य महाविद्यालय के महासचिव सुरेश गुप्ता, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के हिंदी विभाग से प्रो0 पुष्पा रानी, सुरेश देवरालिया, सुंदर लाल गोटेवाला, दीपक बंसल, सुभाष सोनी, सतीश आर्या, सुरेंद्र शर्मा ठा. लाल सिंह, राम देव तायल, प्रवीण गर्ग, प्रेम गोयल, सुभाष गोयल, बीडी आर्य, डा0 राधाकृष्णन चंदेल, ललित मित्तल के अलावा महाविद्यालय के शिक्षक एवं गैर-शिक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे। महाविद्यालय की छात्रा स्नेह ने अशोक कुमार का पोर्ट्रेट बनाकर भेंट किया।

प्रतिभावान बनें सफलता आपके कदम चूमेंगी : डॉ. अलका मित्तल

भिवानी। सत्र 2023-24 में प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए आदर्श महिला महाविद्यालय में छात्रसभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने की। उन्होंने छात्राओं को बताया कि अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहते हुए कर्तव्यों का पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी का परम कर्तव्य है। यह अवस्था आपके जीवन का स्वर्णिम काल है। महाविद्यालय में प्राध्यापक वर्ग अत्यंत सुयोग्य, कर्मठ एवं अनुभवी है, जिनसे आप बहुत कुछ सीख सकते है। प्रतिभावान बनें और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाए। छात्राओं को नियमित रूप से क्लासेज लगाने , अनुशासन का पालन करने , समय प्रबंधन व महाविद्यालय की अन्य गतिविधियों से भी अवगत करवाया। साथ ही उन्होंने छात्राओं से अपील की कि आप महाविद्यालय की गरिमा को बनाए रखें और महाविद्यालय में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। मोबाइल का कम से कम प्रयोग करने व नियमानुसार लाइब्रेरी का उचित प्रयोग करने की भी सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि यह समय आपके लिए बहुत ज्यादा अमूल्य है, इस समय आप बहुत कुछ सीख सकते हैं, इसलिए इस समय को व्यर्थ न गवाएं और प्रतिभावान बने सफलता अपने आप आपके कदम चूमेगी ।कार्यक्रम संयोजिका डॉ0 रिंकू अग्रवाल रही। उन्होंने छात्राओं को महाविद्यालय के विभिन्न विभागों व समय पर आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के बारे में उचित जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आप पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में भी भागीदारी स्थापित करें। जिससे आप अपनी प्रतिभा को और अधिक निखार सकेंगीं । कार्यक्रम में महाविद्यालय उप प्राचार्या नीलम गुप्ता सहित समस्त शिक्षक वर्ग उपस्थित रहा।

छात्राओ को करवाया दुर्गा शक्ति एप से अवगत

छात्राओं की सुरक्षा के लिए पुलिस विभाग ने दुर्गा शक्ति एप लांच किया हुआ है। ऐप का लाल बटन दबाते ही पीड़ित छात्रा के पास चंद ही मिनटों में पुलिस पहुंच जाएगी और छात्रा से छेड़छाड़ या अन्य किसी भी प्रकार की हरकत करने वाले मनचलों को गिरफ्तार कर जेल भेजेगी। महिला प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में इंस्पेक्टर सरोज ने छात्राओ को दुर्गा शक्ति एप से अवगत करवाया और उनके मोबाइल फोन में इस ऐप को डाउनलोड भी करवाया।

830 छात्राओं ने सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में किया पंजीकरण

150 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के साथ सम्पन्न हुई सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

भिवानी। आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 830 छात्राओं ने पंजीकरण करवाया जिसमें से लगभग 700 छात्राओं ने प्रतियोगिता में सफल भागीदारी की। प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के दिशानिर्देशन में प्राध्यापिका नीरू चावला द्वारा आयोजित की गई। महाविद्यालय प्राचार्या ने बताया कि प्रतियोगिता में सामान्य ज्ञान से संबंधित विभिन्न विषयों के 150 प्रश्न पुछे गए। प्रतियोगिता की समयवधि 1 घंटे की रही। महाविद्यालय में प्रतियोगिता की तैयारी 15 दिनों से चल रही थी।जिसमें महाविद्यालय का पूर्ण शिक्षक एवं गैर-शिक्षक वर्ग सलंग्न था। उन्होंने यह भी बताया कि प्रतियोगिता का आयोजन करने का उद्देश्य छात्राओं में प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी के प्रति भय को दूर करना है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से छात्राएं समय प्रबंधन, अनुशासन और सामान्य ज्ञान से संबंधित विषयों की जानकारी ले पाएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रतियोगिता से 2 दिन पहले छात्राओं को प्रतियोगिता देने से संबंधित टिह्नस देने के लिए कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता डॉ0 गायत्री बंसल व बबीता चैधरी रही। जिसमें उन्होंने छात्राओं को प्रतियोगिता की तैयारी करने के लिए विभिन्न विषयों से अवगत करवाया साथ ही प्रतियोगिता की समय सारणी, अनुशासन व नियमों को भी बताया। प्रतियोगिता में नियमावली व अनुशासन पूर्ण रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं वाला ही रखा गया। प्रतियोगिता परीक्षा कॉर्डिनेटर नीरू चावला ने कहा कि प्रतियोगिता को लेकर छात्राएं बहुत अधिक उत्साहित थी। छात्राओं का जोश देखते हुए महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति ने यह निर्णय लिया कि प्रथम 50 रैंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को महाविद्यालय की तरफ से प्रतियोगि परीक्षाओं की तैयारी कराई जाएगी। उन्हें ग्रुप डिस्कसन व साक्षात्कार का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि निकट भविष्य में आने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि प्रथम 10 रैंक पर रहने वाली छात्राओं को प्रति एक हजार रूपये तक के ईनाम दिए जाएगे। प्रतियोगी परीक्षा अधीक्षक डॉ0 दीपू सैनी, उप-अधीक्षक ममता वाधवा व सह-उपअधीक्षक डॉ0 नूतन शर्मा रही। परीक्षा के सफल आयोजन पर महाविद्यालय प्राचार्या व कॉर्डिनेटर ने आयोजन टीम को बधाई दी।

क्रांतिकारी मदनलाल धींगरा

मदनलाल धींगरा क्रांतिकारी नेता थे। इनका जन्म 18 सितंबर 1883 को पंजाब प्रांत के हिंदु परिवार में हुआ था। इनके पिता गुप्ता दितामल सर्जन थे। उनकी माता धार्मिक थी। वह हिंदु संस्कृतियों में रची हुई थी। जब मदनलाल को स्वतंत्रता संबंधी क्रांति से लाहौर कॉलेज से निकाला दिया। तो तब उनके घर वालों ने उनसे नाता तोड़ लिया। फिर उन्हें घर से नाता तोड़ने के बाद अपने जीवन यापन के लिए उन्होंने सबसे पहले क्लर्क, फिर तांगाचालक और फिर करखाने में श्रमिक के रूप् में काम किया था। कारखाने में भी उन्होंने श्रमिकों की दशा सुधारने के लिए यूनियन बनाये। लेकिन फिर भी उन्हें वहां से निकाल दिया गया। उन्होंने फिर कुछ समय तक मुंबई में काम किया, लेकिन फिर अपनी भाई की सलाह लेकर 1906 में वे इंग्लैंड चले गये। इंग्लैंड में वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने गए थे। वहां पर उनको कार्यकर्ताओं की भी सहायता प्राप्त हुई। जहां उन्होंने विलियम हर्ट कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इनके हत्या के जुर्म में उन्हें 17 अगस्त 1909 को फांसी दे दी गई। जब फांसी दी गई थी, इनकी उम्र 23 वर्ष थी। लंदन में वे विनायक दामोदर सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे राष्ट्रवादियों के संपर्क में आए। उस दौरान खुदीराम बोस, कनानी दत्त, जैसे देशभक्तों को फांसी दिए जाने की घटनाओं से लंदन में पढ़ने वाले छात्र तिलमिलाए हुए थे। उनके मन में बदले की भावना थी। फिर एक बार 1 जुलाई 1909 को इंडियन नेशनल एसोसिएसन का लंदन में वार्षिक दिवस समारोह आयोजित हुआ, जहाँ पर कई अंग्रेजों के साथ कई भारतीयों ने भी शिरकत की। यहीं पर अंग्रेजों के लिए भारतीयों से जासूसी कराने वाले ब्रिटिश अधिकारी सर विलियम कर्जन वाइली पधारे थे। धींगरा भी इस समारोह में अंग्रेजों को सबक सिखाने गए थे। हाल ही में जैसे कर्जन वाइली ने प्रवेश किया तभी धींगरा ने रिवाल्वर से उस पर 4 गोलियाँ दाग दी। कर्जन को बचाने का प्रयास करने वाले पारसी डॉक्टर कोवासी ललकाका भी धींगरा की गोलियों से मारा गया। कर्जन को गोली मारने के बाद वे स्वयं को भी गोली मारने वाले थे, किंतु उन्हें पकड़ लिया गया था। इसके बाद लंदन में बेली कोर्ट में 23 जुलाई को धींगरा के केस की सुनवाई करने के बाद जज ने उन्हें मृत्युदंड देने का आदेश दिया। इस तरह उनकी मृत्यु हो गई थी। धींगरा है वो कर्जन वायली को भारतीय पर किए जा रहे अत्याचारों के लिए दोषी मानते है। ढींगरा के मन पर देश की गरीबी को देख कर बहुत असर हुआ। इस गरीबी के हालात को देखकर साहित्य का अध्ययन किया। इस तरह से धींगरा का काफी योगदान था।

टविंकल(बी0ए0 प्रथम वर्ष)

जननायक राव तुलाराम

जीवनी- राव तुलाराम सिंह (9 दिसंबर 1825 - 23 सितंबर 1863) 1857 का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्होंने हरियाणा राज्य में 'राज नायक' माना जाता है। विद्रोह काल में, हरियाण्णा के दक्षिण- पश्चिमी इलाके से संपूर्ण ब्रिटिश हुकूमत को अस्थायी रूप् से उखाड़ फेंकने तथा दिल्ली के ऐतिहासिक शहर में विद्रोही सैनिकों की, सैन्य बल, धन व युद्ध सामग्री से सहता प्रदान करने का श्रेय राव तुलाराम को जाता है। हरियाणा का रेवाड़ी जिला जिसे अहीरवाल लंदन कहा जाता है और इस लंदन के राजा राव तुलाराम थे। अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने के उद्देश्य से एक युद्ध लड़ने के लिए मदद लेने के लिए उन्होंने भारत छोड़ा तथा ईरान और अफगानिस्तान के शासकों से मुलाकात की, रूस के जार के साथ संपर्क स्थापित करने की उनकी योजनाएँ थी। इसी मध्य 37 वर्ष की आयु से 23 सितंर 1863 को काबुल में पेचिश से उनकी मृत्यु हो गई। जिसको लेकर हरियाणा के लोग 23 सितंबर का दिन शहीदी दिवस के रूप में मनाते है।

प्रारंभिक जीवन- इनका जन्म हरियाणा राज्य के रेवाड़ी शहर में एक यदुवंशी (अहीर) परिवार में 9 दिसंबर 1825 को हुआ। इनके पिता का नाम राव पूरन सिंह था उस वक्त वहां उनके पिता जी राव पूरन सिंह था। उस वक्त वहां उनके पिता जी राव पूर्ण सिंह का राज था। तथा माता जी का नाम ज्ञान कुंवर था। इनके दादा का नाम राव तेज सिंह था। राव तुलाराम की शिक्षा दीक्षा जब वह 5 वर्ष के थे तब शुरू कर दी गई थी। राव तुलाराम को उर्दू, हिंदी, फारस भाषा का ज्ञान था। इसके साथ-साथ उन्हें शास्त्र और घुड़सवारी चलाना भी आता था।

राव तुलाराम का इतिहास में स्थान- 1857 की क्रांति में राव तुलाराम ने खुद को स्वतंत्र घोषित करते हुए राजा की उपाधि धारण कर ली थी। उन्होंने नसीबपुर-नारनौल के मैदान में अंग्रेजों से युद्ध किया। जिसमें उनके 5 हजार से अधिक क्रांतिकारी सैनिक मारे गए थे। उन्होंने दिल्ली के क्रांतिकारियों को भी सहयोग दिया व 16 नवंबर 1857 को स्वयं ब्रिटिश सेना से नसीबपुर-नारनौल में युद्ध किया और ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर दी तथा ब्रिटिश सेना के कमांडर जेरार्ड और कप्तान वालेस के मौत के घाट उतार दिया। परंतु अंत में उनके सभी क्रांतिकारी साथी मारे गए। राव तुलाराम को घायल अवस्था में युद्ध क्षेत्र से हटना पड़ा, वह पराजित हुये पर हिम्मत नहीं हारी। आग्र की लड़ाई की रणनीति तय करने हेतु वह तात्या टोपे से मिलने गए, परंतु 1862 में तात्या टोपे के बंदी बना लिए जाने के कारण सैनिक सहायता मांगने ईरान व अफगानिस्तान चले गए इसी बीच काबुल में वह किसी गंभीर बीमारी का शिकार हो गए और 23 सितंबर 1863 को उन्होंने काबुल में अंतिम सांस ली वहां पर उनका सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया था। 1877 में उनकी उपाधि उनके पुत्र 'राव युधिष्ठिर सिंह' को अहिरवाल का मुखिया पदस्थ करके लौटा दी गयी।

मीनाक्षी(बी0ए0 प्रथम वर्ष)

एनसीसी यूनिट ने चलाया कचरा मुक्त भारत-स्वच्छता ही सेवा कैंपेन

WHR (Girls) Bn Ncc Rohtak की महाविद्यालय की एन.सी.सी यूनिट द्वारा 'कचरा मुक्त भारत - स्वच्छता ही सेवा कैंपेन (विश्व पर्यटन दिवस) के तहत एक्सटेंशन लेक्चर आयोजित किया। जिसका विषय 'प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन' रहा । जिसमे वक्ता जूलॉजी विभाग से मैडम मोनिका रही। रैली का भी आयोजन किया गया। रैली के माध्यम से प्लास्टिक को हटाएगे धरती को बचाएंगे , कदम कदम से प्लास्टिक हटाएं ,आओ धरती को स्वर्ग बनाएं। विभिन्न प्रकार के नारों से लोगो को प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के तरीकों से अवगत करवाया गया।

दो दिवसीय घेवर कार्यशाला आयोजित

आदर्श महिला महाविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग द्वारा दो दिवसीय पारंपरिक व्यंजन घेवर बनाने के कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 75 से अधिक विभिन्न संकायों की छात्राओं व प्राध्यापिका ओं ने भाग लिया और पारंपरिक व्यंजन घेवर बनाना सिखा। कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के दिशा निर्देशन में गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष संगीता मनरो द्वारा किया गया। जिसमें प्रशिक्षिका गृह विज्ञान विभाग से डॉ0 सुनंदा रही। उन्होंने छात्राओं को तीज त्यौहारों पर बनने वाला हरियाणवी संस्कृति से ओत-प्रोत व्यंजन जाली, मलाई व केसर घेवर बनाना सिखाया। छात्राओं और प्राध्यापिकाओं ने घेवर बनाने के विधि न केवल सिखी अपितु प्रशिक्षिका के मार्गदर्शन में स्वयं बनाकर भी देखा। प्रशिक्षिका ने छात्राओं को कार्यशाला में घेवर बनाने के टिप्स भी दिए। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने कहा कि छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ गृह कार्य में भी निपुण होना आवश्यक है। आज का युवा वर्ग पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद भूलकर फास्ट फूड की ओर आकर्षित हो रहा है। इस अवसर पर छात्राओं ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि हम पहले यह घेवर हलवाई की दुकान पर बनता देखते थे लेकिन आज स्वयं अपने हाथों से बनाकर खुशी महसूस हो रही है। घेवर के स्वाद को किस तरह बढ़ाएं साथ ही इसके टिप्स भी सीखें। इस अवसर पर गृह विज्ञान विभाग का समस्त शिक्षकवर्ग एवं छात्राएं उपस्थित रही।

छात्राओं ने महाविद्यालय का नाम किया रोशन

छात्रा अमीषा व छात्रा प्रीति ने पुरूषों और महिलाओं के लिए पहली उत्तर क्षेत्र राष्ट्रीय सेस्टोबॉल चैंपियनशिप दिनांक 23 से 24 सितंबर 2023 को पद्मावती अकादमी बरेली, उत्तर प्रदेश में आयोजित किया गया। जिसमें आदर्श महिला महाविद्यालय की छात्रा कुमारी अमीषा व प्रीति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्राओं की इस उपलब्धि पर प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने बधाई दी और छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की।

भगत सिंह सरदार सुरमा

इंकलाब जिंदाबाद! इंकलाब जिंदाबाद!
साम्राज्यवाद का नाश हो।

जैसे नारों की गुंज जब कानों में पड़ती है तो भक्तसिंह जैसे क्रांतिकारी देशभक्त के स्मरण मात्र से ही नई ऊर्जा का संचार हमारी धमनियों में होने लगता है। भगतसिंह जैसे युवा बलिदानी का देश की स्वतंत्रता के लिए दिए गए बलिदान अविस्मरणीय है। भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को लायलपुर जिले के बंगा गांव में सिक्ख आर्य समाजी परिवार में हुआ। इनके जन्म दिवस पर इनके चाचा अजीत सिंह जेल से रिहा होकर आए थे इसलिए इनकी दादी ने इनका नाम 'भाग्य वाला' या भगता रखा था। इनके पिता किशन सिंह एवं माता विद्यावती थी। बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित भगत सिंह करतार सिंह सराभा एवं लाला लाजपत राय से बहुत अधिक प्रभावित थे। वे अपनी कमीज की जेब में करतार सिंह सराभा की तस्वीर रखते थे। भारतीय इतिहास की यह विडम्बना रही है कि देश की स्वतंत्रता के लिए मर मिटने वाले शहीदों में किसी को अधिक ख्याति प्राप्त हुई तो किसी को कम। भगतसिंह का 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय असेम्बली हाल में बम फेंका जाने वाला वाक्या भला किस भारतीय को स्मरण न होगा। इस घटनाक्रम के घटित होने से ठीक पहले भगत सिंह लाहौर सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स को मौत की नींद सुला चुके थे। पकडे जाने का किंचित मात्र भी भय भगतसिंह में नहीं था तभी तो केंद्रीय विधान सभा में बम फेंकने को तैयार हो गए। भगतसिंह स्वयं यह जानते थे कि बम फेंकने के अपराध में चाहे उन्हें जेल की सजा हो परंतु सांडर्स की हत्या के आरोप में फांसी होना निश्चित था। फिर भी भगत सिंह ने फांसी के फंदे को स्वयं अपने गले में डालकर अक्षय कीर्ति प्राप्त की।

असेम्बली हाल में बम फेंकने के लिए

क्रांतिकारियों में से बटुकेश्वर दत्त एवं विजय कुमार सिन्हा को चुना गया परंतु भक्तसिंह के घनिष्ट मित्र सुखदेव ने भगत सिंह से कहा कि यह योजना तुम्हारी थी और यदि तुम स्वयं इसमें सम्मिलित नहीं हुए तो लोग तुम्हें कायर कहेंगें। जयदेव कपूर ने भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त के लिए न केवल दर्शक दीर्घा के प्रवेश पत्रों का प्रबंध किया बल्कि ऐसे स्थान पर भी बिठाया जहां से बम फेंकने में सुविधा हो। बम का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं था बल्कि बहरी अंग्रेजी सरकार को अपने उद्देश्य से परिचित करवाना था। जैसे ही विधानसभा में विधेयक को विशेषाधिकर से पास करने की घोषणा होती है तभी भक्तसिंह एवं बटुकेश्वर दत्त ने अपने स्थान से खड़े होकर ऐसी जगह पर बम फेंका जहां कोई बैठा नहीं था।

बम के साथ-साथ उन्होंने कुछ पर्चे भी फेंके जिनपर लिखा था कि ये धमाके हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना की ओर से बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए किए गए है। हाल में फेंके गए पर्चों में से एक पर्चा 'हिंदुस्तान टाइम्स' के प्रतिनिधि के हाथ लग गया और वह अगले दिन अखबार में छपा। विभिन्न मुकद्दमों की पैरवी के दौरान भक्त सिंह ने अपने बयान में कहा कि विधानसभा में बम फेंकने की प्रेरणा उन्हें फ्रांसिसि अराजकतावादी क्रान्तिकारी मेश्यि वेला से मिली। सांडर्स के हत्याकांड एवं विभिन्न आरोप-प्रत्यारोपों के बाद भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को 23 मार्च 1931 को फांसी की सजा सुना दी गई। भगतसिंह का महत्व केवल बम फेंकने एवं सांडर्स को मारने तक ही सीमित नहीं था बल्कि वे शोषण रचित समाज की रचना के प्रखर चिंतक भी थे। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में उनका नाम सदैव सम्मान के साथ लिया जाएगा।

रूचि वत्स
सहायक प्रवक्ता(इतिहास विभाग)

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

1999 में इंडियन एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा पहली बार चंद्रयान-1 के बारे में सोचा गया। इसके पश्चात एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया ने सन् 2000 में इस विषय पर विचार किया। इन दोनों बैठकों के पश्चात् यह निर्णय किया गया कि इसरो एक नेशन लूनार टास्क फॉर्स बनाएगी। इसके साथ ही इस बात पर विचार करेगी कि चांद पर पहुंचना संभव है कि नहीं अंततः नवम्बर 2003 भारत सरकार द्वारा चंद्रयान के लिए मंजूरी दी गई। 22 अक्टूबर 2008 को चंद्रयान-1 को लॉन्च किया गया। चंद्रयान-1 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवी-सी 2 द्वारा भेजा गया। 29 अगस्त 2009 तक यह मिशन लगातार चलता रहा। 29 अगस्त को इसका कनेक्शन इसरो से टूट गया। यह चंद्रमा की सतह पर नहीं उतर पाया। फिर इसरो द्वारा हार नहीं मानी गई तथा इसरो द्वारा चंद्रयान -2 के लिए तैयारी आरंभ कर दी गई। अंततः इसरो द्वारा 15 जुलाई 2019 को चंद्रयान-2 श्रीहरिकोटा से जीएसएलवी-एमके 3 एम-1 प्रक्षेपण यान द्वारा प्रक्षेपित किया गया। यह लॉन्चर काफी शक्तिशाली था तथा इसे भारत में बनाया गया था। भारत के लोगों में इस मिशन को लेकर काफी उत्साह था तथा सारी दुनिया की नजरें भारत के चंद्रयान-2 मिशन पर टिकी हुई थी। भारत द्वारा कड़ी मेहनत के पश्चात् इसे लॉन्च किया गया। भारतीय वैज्ञानिकों में भी इसको लेकर काफी उत्साह था। पहले भारत के चंद्रयान-1 द्वारा चंद्रमा पर पानी की खोज की गई थी। यह मिशन चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने के लिए बनाया गया। आज तक कोई भी देश चंद्रमा के दक्षिणी-ध्रुव पर नहीं उतरा था। इससे पहले अमेरिका, चीन तथा रूस ही चंद्रमा की सतह पर उतरने वाले देश बने थे। यह इसरो व भारतीयों के लिए काफी मुश्किल सफर था परंतु भारतीय हर चीज के लिए तैयार थे। इस अभियान के तीन मॉडयूल्स थे- लैंडर, ऑर्बिटर और रोवर। लैंडर का नाम विक्रम व रोवर का नाम प्रज्ञान रखा गया। लेकिन अंत समय में जब मिशन को लॉन्च किया गया तो चंद्रयान ने काफी समय तक चंद्रमा के चारों ओर चक्कर लगाया ताकि सही समय व सही स्थान देखकर लैंडिंग होने में केवल मात्र 15 मिनट बचे तो चंद्रयान पर लैंडिंग होने में केवल मात्र 15 मिनट बचे तो चंद्रयान के विक्रम लैंडर में दिक्कत हो गई। जिससे चन्द्रयान चन्द्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग नहीं कर पाया तथा मिशन सफल न हो गया। यह भारतीयों के लिए दुःखद स्थिति थी। नरेंद्र मोदी ने इसरो के मुखिया के सिवन को गले लगाकर आश्वासन दिया। लेकिन भारतीयों व इसरो ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने प्रयास जारी रखा। भारत द्वारा फिर से 14 जुलाई, 2023 को चंद्रमा के लिए उड़ान भरी गई। यह भारत के लिए बड़े गर्व का दिन था। सभी भारतीयों को चन्द्रयान-3 से बहुत आशाएँ थी। अंततः चन्द्रयान-3 ने 23 अगस्त 2023 को सफलता प्राप्त की और भारतीयों की आशाओं को पूरा किया। यह भारतीयों के लिए बड़ा गर्व का दिन था। भारत के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला देश बना। उस समय भारतीयों के उत्साह, उमंग और हर्ष का अनुमान लगाना मुमकिन नहीं था। स्वामी विवेकानंद के अनुसार-

उठो, जागो तब तक प्रयास करो
जब तक तुम्हें सफलता न मिल जाए।

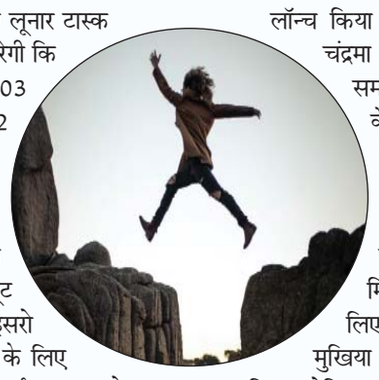

...**भावना**(बी0ए0 प्रथम वर्ष)

मोटिवेशनल कविता

एक बार स्कूल के पहले दिन पर अंक नौ ने नंबर अंक आठ को थप्पड़ मार दिया। आठ ने पूछा अरे भाई क्यों मारा ? मैंने क्या गलती की ? तो नौ ने कहा मैं बड़ा हूँ। थप्पड़ मार सकता हूँ। और अंक नौ की ये बात सुनते ही कक्षा में थप्पड़ों की बौछार शुरू हो गई। आठ ने सात को मारा, सात ने छः को मारा, छः ने पांच को मारा और ऐसा करते करते जब दो ने एक को थप्पड़ मारा तो शून्य जो या वो समझ गया कि हां पड़ेगी अब तुझे भी। तो वो दुबक के कोने में बैठ गया। शून्य को ऐसा कोने में दुबके हुए बैठा देखकर एक ने कहा- भैया तू डर मत, मैं तुझे नहीं मारने वाला। ये कहते ही एक जाकर के शून्य के बगल में बैठ गया। बगल में बैठने का मतलब क्या था कि शून्य था वो हो गया दस। है ना। शून्य ने पूछा जहाँ सब अपने से छोटे को थप्पड़ मार रहे थे पर आपने तो मुझे बड़ा बना दिया। ऐसा क्यों ? तो एक ने कहा देखो भैया- बड़ा वो नहीं होता जो खुद को बड़ा जाने या माने। बड़ा वो होता है जो किसी दूसरे को बड़ा बना दे। इंसान अपने मोल, अपनी ताकत, अपनी उम्र से बड़ा नहीं होता। इंसान बड़ा होता है अपनी सोच से।

...**काफी भारद्वाज**(बी कॉम प्रथम वर्ष)

स्त्री

मुश्किलों से डरी नहीं,
हर समस्या का समाधान हूं,
डर मुझे डरा न सका,
क्योंकि मैं स्त्री हूं।
कोमल हूं पर कमजोर नहीं,
आईना हूं पर कभी बिखरती नहीं,
दर्द से भरी हूं पर जीना छोड़ती नहीं,
क्योंकि मैं स्त्री हूं।
चहत है पर किसी से उम्मीद नहीं,
अवाज हैं पर बोलती नहीं,

जज्बात हैं पर मुंह खोलती नहीं
क्योंकि मैं स्त्री हूं।
जिम्मेदारियों को निभाया बड़ी जिम्मेदारी से,
दिखावे को कभी देखा नहीं,
सरलता के समीप हूं,
क्योंकि मैं स्त्री हूं।
श्रही परवाह मुझे अपने बगीचे के हर एक फूल की पर,
किसी के लिए अच्छी किसी के लिए बुरी हूं,
क्योंकि मैं स्त्री हूं।

साक्षी(बी0कॉम प्रथम वर्ष)

ऊँचा स्थान गुरु का

सबसे ऊँचा स्थान गुरु का।
सबसे बड़ा है मान गुरु का।
भूले-बिसरे हम जो आए।
हाथ पकड़ लिखना सिखाएँ।।
कदम-कदम पर साथ निभाए।
सफलता तक हमें पहुंचाए।।
जब चुनौतियों से हम डर जाएं।
वहीं हमारा साहस बढ़ाएं।।

सबसे ऊँचा स्थान गुरु का।
सबसे बड़ा है मान गुरु का।
जन्म से लेकर हमें सिखाते।
ज्ञान का दीपक रोज जलाते।।
गलतियों पर हम बताते।
सफलता का रास्ता सुगम बनाते
अज्ञानता का अंधेरा दूर हटाते।
ज्ञान का उजाला हर तरफ फैलाते।
सबसे ऊँचा स्थान गुरु का।
सबसे बड़ा है मान गुरु का।

अनामिका (बी.कॉम प्रथम वर्ष)

My language is everything for me

My language is everything for me
But it does not mean I am going to
Disrespect your language.
I know the value of your language also.
My language is the essence of
My identity and culture, My dear
My language is my major tool
For exchange of my ideas, emotions
And feelings. So also your language
is your key to the ideas of awareness.
Let us respect each other's language
And use the language in proper places.
Let us use our own mother tongue
To its full capacity and enjoy life.

....**Sneha** (B.Com 1st Year)

Life depletes when ozone depletes

Ozone is like a mother to the Earth,
Who protects its children from harmful radiations.
Reduce Depletion of ozone.
Otherwise we will be in the Red Zone.
And then due to depletion of ozone,
Life will also get depleted.
So, to save life save ozone.
Because earth without the ozone layer
Is like a house without roof.
Let's take on oath to protect the ozone layer So that we all can be saved from skin cancer.
That is why we all have to work together
To save the ozone layer.

...**Mahak**(B.Com-I)

Life Lesson

There is no such thing as failure it's a life lesson for future.
Never lose faith
Keep working Hard
You will find a way
Let go of Negativity and focus on the Good
The main Lesson of the life is hard work it will never betray you
It always helps you to get success in life.
Keep working Hard for a bright future.

No matter how other Feels about you if you want to become a good person in front of others you have to get habitual to tell a lie and always ready to bear your disrespect. So don't think what people be, Believe what you think. If you are comparing yourself with anyone it means you are insulting yourself. We all need us to understand our feelings. To be happy you don't need to be perfect. You just need to be real and accept yourself as you are because you are already enough.

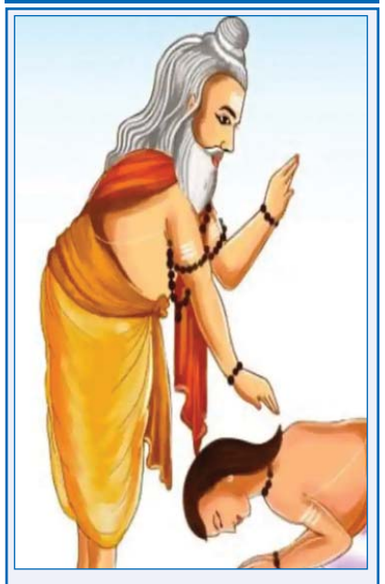

Believe in yourself, you are enough.

....**Payal** (B.Com 1st Year)

चंद्रमा की ओर

सीना चैड़ा हुआ सबका देश का बढ़ गया मान,
लहराया विश्व में जीत का परचम बढ़ी भारतीयों की शान।
चाँद की सतह पर पहुंच गया हैं चंद्रयान।
लैंडिंग के आखिरी पल में थम गई थी सबकी सांस,
धरती से दिखने वाले चाँद के पहुंच गए हम इतने पास।
मिशन पूरा करने में लगा दी वैज्ञानिकों ने पूरी जान,
चंद की सतह पर पहुंच गया है चंद्रयान।
हार को जीत का नया कदम बना, भारत ने बना दी नई मिसाल,
हर जगह लोगों के चेहरे पर प्रसन्नता का गुमाल।
रोवर से अलग होकर चंद्रमा की सतह की जांच करेगा प्रज्ञान,
चांद की सतह पर पहुंच गया है चंद्रयान।
भारत ने रच दिया है इतिहास,
सभी भारतीयों के लिए गर्व की है यह बात।
इतने बड़े मिशन को पूरा करने में था हजारों वैज्ञानिकों का योगदान,
चांद की सतह पर पहुंच गया है चंद्रयान।

...**अन्नु सैन** (बी0ए0 प्रथम वर्ष)

हिंदी भाषा के बढ़ते कदम

एक भाषा है आशा भरी...
जिसका नाम हिंदी है।
हिंदी केवल जुबा नहीं
देश के माथे की बिंदी है।

हिंदी को आगे बढ़ाना है उन्नति की राह ले जाना है। केवल एक दि नही नहीं हमें नित हिंदी दिवस मनाना है। प्रतिवर्ष पूरे भारत में 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1918 में गांधी जी ने हिंदी साहित्य सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था और 14 सितंबर 1949 के दिन संविधान सभा में एक मत से यह निर्णय लिया गया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी। हिंदी भाषा को देवनागरी लिपी में भारत की कार्यकारी और राजभाषा का दर्जा अधिकारिक रूप् में दिया गया। हिंदी हमारी दिल की भाषा है जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, संसद से लेकर सड़कां तक और साहित्य से लेकर सिनेमा तक हर जगह संवाद का सबसे बड़ा पुल बनकर हमारे सामने आती है। सोशल मीडिया या तकनीकी के इस युग में भी हिंदी की नींव नहीं हिली बल्कि और ज्यादा निखरकर हमारे सामने आई है।

दरअसल हिंदी अपने आप में संपूर्ण है। अपने आप में गौरवमयी भाषा है। साल 1900, साल 1899, लांस एंजेलिस अमेरिका हमारी ज्ञान परंपरा के शिखर पुरुष स्वामी विवेकानंद जी से एक अमेरिकन ने पूछा- श्भ्वू ंतम लवन ैंउप रपश् स्वामी जी ने उत्तर दिया- 'मैं अच्छा हूँ।' अमेरिकन को लगा स्वामी जी को अंग्रेजी नहीं आती इसलिए हिंदी में जवाब दे रहे है लेकिन उस अमेरिकन को टूटी-फूटी हिंदी आती थी तो अगला सवाल उसने हिंदी में पूछ लिया- ÷भारत से यहां आकर आपको कैसा लग रहा है।÷ इस बार स्वामी जी ने उसे अंग्रेजी में उत्तर दिया- श्प् ंउ मिमसपदह हववकए लवनत बवनदजतल पे इमंनजपनिसश् अमेरिकन ने कहा मैंने आपसे अंग्रेजी में सवाल पूछा तो आपने हिंदी में जवाब दिया और अब जब हिंदी में पूछा तो आप अंग्रेजी में बोल रहे है ये क्या पहेली है। तब स्वामी जी मुस्कुराएं और बोले जब तुमने अपनी मातृभाषा में सवाल किया तब मैंने अपनी मातृभाषा में जवाब दिया। लेकिन जब तुमने मेरी मातृभाषा का सम्मान करते हुए हिंदी में प्रश्न पूछा तो मैंने तुम्हारी मातृभाषा का सम्मान करते हुए अंग्रेजी में जवाब दिया। स्वामी जी की इस बात से स अमेरिकन का दय भर आया। हिंदी की तुलना में अंग्रेजी को श्रेष्ठ बताने वालों से मेरा निवेदन है कि हिंदी तेलगु या हिंदी मराठी के नाम पर हमें मत बांटिए। 1953 में भाषा के ही नाम पर भारत का पहला राज्य आंध्रप्रदेश बना और इसके बाद भाषा के ही नाम पर एक के बाद एक कई राज्य बनते गए जैसे- महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, हरियाणा इत्यादि। देश जितना भाषाओं के नाम पर बंटता जा रहा है भाषाओं के बीच समाज के बीच व मनुष्य और क्षेत्रवाद उतना ही बढ़ता जा रहा है। भाषाएँ या माताएँ छोटी या बड़ी नहीं होती। माताएं केवल सम्मानिय होती है। हिंदी हिंदुस्तान की भाषा ही नहीं बल्कि हिंदुस्तानियों की पहचान है। आज के आधुनिक युग में हमें अंग्रेजी भाषा भी सीखनी चाहिए जरूरी है लेकिन हमें अपनी मातृभाषा हिंदी को कभी नहीं भूलना चाहिए। हिंदुस्तान की शान है हिंदी, हर भारतीय का सम्मान है हिंदी। हम सबका अभिमान है हिंदी, भारत माँ का मान है हिंदी।

चंचल (तृतीय वर्ष)

महाविद्यालय में धूमधाम से मनाया गया हिंदी दिवस

हिंदी प्रत्येक क्षेत्र में फल फूल रही है: अशोक बुवानीवाला

भिवानी। महाविद्यालय में हिंदी साहित्य परिषद और नेहरू युवा केन्द्र एवं नेता जी सुभाष चंद्र बोस युवा जागृति, भिवानी के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 'हिंदी के बढ़ते कदम' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 20 छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला और विशिष्ट अतिथि के रूप में पी0 सी0 सी0 ए0 आई0 के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेंद्र लोहिया उपस्थित रहे। महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि हिंदी देश की एकता की भाषा है। यह एक वैज्ञानिक भाषा है। इस भाषा में हम अपनी भावनाएँ जितनी सहूलियत और अपनेपन से व्यक्त करते है, उतना अन्य किसी भाषा में व्यक्त नहीं कर पाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी आज प्रत्येक क्षेत्र में फल-फूल रही है और प्रतिदिन इसका महत्त्व बढ़ता जा रहा है।प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने कहा कि हिंदी हमारे राष्ट्र की पहचान है। हिंदी स्वाधीनता संग्राम की भाषा रही है। आज हिंदी

के लिए यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि हम सब मिलकर हिंदी का सम्मान बढ़ाएं और इस पर गर्व करें।

निदेशिका डॉ0 अरुणा सचदेव ने हिंदी के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व से सभी को परिचित करवाते हुए प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। पी0सी0सी0ए0आई0 के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेंद्र लोहिया ने कहा कि हिंदी हमारी संस्कृति की संवाहिका है और यह महाविद्यालय इस राष्ट्रीय भाषा का सदैव सम्मान करता रहा है। मंच संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ0 मधु मालती ने बड़े ही प्रभावी ढ़ंग से विचार व्यक्त करते हुए सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय के संस्थापक बनारसीदास गुप्त व भगीरथमल बुवानीवाला हिंदी के प्रबल पक्षधर थे। इस कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र भिवानी व खेल युवा कार्यक्रम मंत्रालय भारत सरकार द्वारा हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शिक्षाविद् डॉ0 मधु मालती को प्रशस्ति - पत्र देकर

सम्मानित किया। इस अवसर पर वैश्य महाविद्यालय में आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता 'काव्य-संसार' में छात्रा टिंवक्ल को बेहतरीन प्रस्तुति के लिए 1100 रुपये का नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ और छात्रा वसुधा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। दोनों छात्राओं को महासचिव अशोक बुवानीवाला व प्राचार्या ने बधाई देकर उनका उत्सावर्धन किया।

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संगीता शर्मा बी0एस0सी0 द्वितीय वर व द्वितीय स्थान वंशिका गौड़, बी0ए0 तृतीय वर्ष, तृतीय स्थान हिमांशी, बी0कॉम प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में निर्णायकमंडल की भूमिका डॉ0 रेणू व ममता वाधवा ने निभाई। इस अवसर पर सदाचारी शिक्षा समिति की अध्यक्ष सावित्री यादव, स्वास्थ्य विभाग से सुभाष यादव, नेताजी सुभाषचंद्र बोस युवा जागृति समिति, भिवानी के अध्यक्ष राष्ट्रपति अवार्डी अशोक भारद्वाज व समस्त हिंदी विभाग एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

करियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल के तहत किया विस्तार व्याख्यान का आयोजन

आदर्श महिला महाविद्यालय में करियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल के तहत विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के दिशनिर्देशन में किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता राकेश शर्मा(करियर काउंसलर , हिसार) से रहे। उन्होंने छात्राओं को समयप्रबंधन, अनुशासन, विषयवस्तु, करियर से संबंधित विभिन्न विकल्प बताएं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित कुछ टिप्स भी दिए।

नई सोच रखें और उसे बुलंद करे : प्रो. रवि प्रकाश

प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कुछ न कुछ प्रतिभा एवं कला अवश्य होती है, आवश्यकता उसे पहचानने और निखारने की। सही मायने में उद्यमिता स्वयं के बारे में न सोचकर अपितु समाज एवं राष्ट्र के बारे में सोचना है। यह उद्गार आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित विस्तार व्याख्यान में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय से आए मुख्य वक्ता प्रो0 रवि प्रकाश ने कहे। विस्तार व्याख्यान का आयोजन चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय एवं स्वावलंबी भारत अभियान, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय की

उद्यमिता प्रकोष्ठ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आयोजन कुलपति प्रोफेसर राजकुमार मित्तल के नेतृत्व व प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के सानिध्य में हुआ। विस्तार व्याख्यान का विषय 'भारत में उद्यमिता का वर्तमान परिदृश्य' रहा। प्रो0 रवि प्रकाश ने यह भी कहा कि आज भारत हर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रहा है। जिसमें महिलाओं की भूमिका बढ़-चढ़कर रहती है। उन्होंने सफल उद्यमियों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए छात्राओं की नई सोच को बुलंद करने के लिए प्रेरित किया और कहा कि आप नौकरी लेने वाले न बनकर, नौकरी देने वाले बनें। पढ़ाई के साथ-साथ कौशल को विकसित करने व स्व-रोजगार को अपनाने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने छात्राओं को 'अर्न वाइल यू लर्न अभियान' के साथ जुड़ने को कहा। उन्होंने कई ज्वलंत उदाहरणों के साथ छात्राओं को प्रेरित किया कि वह घर पर ही अपना छोटा-सा व्यवसाय मेहंदी, सौंदर्य प्रसाधन प्रशिक्षक व टयूशन या अन्य कोई भी विकल्प व्यवसाय के रूप में चयन कर एक सफल उद्यमी बन सकती है। कार्यक्रम में डॉ0 रेणु व डॉ0 गायत्री बंसल एवं उद्यमिता प्रकोष्ठ से प्राध्यापिका नीरजा, आस्था, उपस्थित रही।

....मन्ने तो चिट्ठी पढ़नी कोनी आती, इब इस उम्र मैं मन्ने कोन पढ़ावगा

छात्राओं ने नूक्कड़ नाटक की प्रस्तुति से दिया साक्षरता का संदेश

अंतर्राष्ट्रीय साक्षारता विस के उपलक्ष में महाविद्यालय में साप्ताहिक साक्षरता जागृती अभियान चलाया गया। जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने नूक्कड़ नाटक प्रस्तूति के द्वारा संदेश दिया कि साक्षरता हमारे लिए ही नहीं अपितु हमारे बुजुर्गों के लिए भी बहुत आवश्यक हैऔर बताया कि साक्षरता का महत्व आज से नहीं बल्कि हमारे माता-पिता के समय से ही महत्त्वपूर्ण रहा है। महाविद्यालय मे दी गई नूक्कड़ नाटक की प्रस्तूति से छात्राएं भाव विभौर हुई और उन्होंने विश्वास दिलाया कि हम अब अपनी दादी-नानी ने खुद पढ़ावागें और उन न साईन करना सिखावांगी। महाविद्यालय में साप्ताहिक साक्षरता अभियान के तहत पोस्टर मेकिंग, स्लोगन लेखन व भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। भाषण का विषय 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' व 'पढ़ेगा इंडिया तो बढ़ेगा इंडिया' रहा। जिसमे सभी संकायों की छात्राओं ने भाग लिया। अभियान के अन्तर्गत ÷आजीवन सिखना÷ विषय पर वर्कशाप भी आयोजित की गई। जिसमें वक्ता डॉ0 रिंकू अग्रवाल (एसोसिएट प्रोफेसर) अंग्रेजी विभाग रही। उन्होंने छात्राओं को कहा कि सीखना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है । जिसका अंत केवल मरन काल

पर होता है। सिखना केवल पढाई या किताबों तक सीमित नहीं होना चाहिए। उन्होंने छात्राओं को अभिप्रेरित भी किया कि हम प्रकृति, वातावरण मित्र, माता-पिता से हर समय कुछ न कुछ सीखते है। छात्राओ को सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मप्रेरित होने को भी कहा। उन्होंने यह भी कहा कि सिखने से सृजनात्मकता व आत्मविश्वास बढता है । प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के दिशा निर्देशन में हुआ। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्रीति, द्वितीय संस्थान संगीता शर्मा, तृतीय स्थान हिमांशी का रहा। पलक व मुस्कान को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ज्योति, द्वितीय स्थान कल्याणी देवी व तृतीय स्थान रितिका का रहा। स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स्नेहा व द्वितीय स्थान रितिका का रहा। कार्यक्रम में साक्षरता अभियान से जुड़ी प्राध्यापिकाएं ममता वाधवा, डॉ0 रेनू, डॉ0 आशिमा, डॉ0 गायत्री बंसल, बबीता चैधरी, डॉ0 सुचेता सोनी शिक्षक एवं गैर-शिक्षक वर्ग के साथ उपस्थित रही।

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में छात्राओं ने प्राचार्या व प्राध्यापिकाओं को दिए फूल

शिक्षक दिवस के उपलक्ष में महाविद्यालय की विभिन्न संकायों की छात्राओं ने प्राचार्या एवं प्राध्यापिकाओं को फूल देकर सम्मानित किया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल एवं सीनियर प्राध्यापिकाओं को प्रशासनिक अधिकारी एवं शाखा प्रबंधक (एल.आई.सी). श्री रमन शांडिल्य जी ने शिक्षक गौरव सम्मान से सम्मानित किया।

'पुनीत सागर अभियान मेगा इवेंट' के तहत एक्सटेंशन लेक्चर आयोजित

आदर्श महिला महाविद्यालय की एन.सी.सी यूनिट ने 'पुनीत सागर अभियान मेगा इवेंट' के तहत एक्सटेंशन लेक्चर आयोजित किया। जिसका विषय 'जी-20 की भूमिका और भारत द्वारा प्रचारित नेतृत्व' रहा। जिसमें मुख्य वक्ता ममता वाधवा रही। उन्होंने छात्राओं को जी-20 शिखर सम्मेलन के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। इसके साथ ही महाविद्यालय में एन.सी.सी यूनिट द्वारा 3पी विषय पर पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता और रैली का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन एन.सी.सी अधिकारी डॉ. रिंकू अग्रवाल ने प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के कुशल दिशा निर्देशन एवं नेतृत्व में किया। रैली के माध्यम से कैडेट्स ने लोगों को प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने के लिए प्रेरित किया। रैली को महाविद्यालय उपप्राचार्य नीलम गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सी.पी.एल दीक्षा का रहा, द्वितीय स्थान कैडेट नताशा का और तृतीय स्थान कैडेट बिंदु का रहा।

शहीद भगतसिंह के जन्मदिवस पर कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित

प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के दिशानिर्देशन में इतिहास विभाग द्वारा शहीद भगतसिंह के जन्मदिवस पर कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया । इस प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। प्रथम स्थान प्रीति बी0ए0 तृतीय वर्ष, द्वितीय स्थान संगीता शर्मा बी0एस0सी0 द्वितीय वर्ष व तृतीय स्थान पलक बी0ए0 प्रथम वर्ष एवं सांत्वना पुरस्कार दीक्षा बी0ए0 द्वितीय वर्ष को प्राप्त हुआ।

छात्रा पलक का हुआ नेशनल में चयन

छात्रा पलक का चयन के0एस0एस0आर0 तुगलकाबाद, नई दिल्ली में आयोजित प्रतियोगिता में हुआ। यह प्रतियोगिता 26 अगस्त 2023 से 8 सितंबर 2023 तक आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुमारी पलक ने 347/400 अंक लेकर नेशनल में अपनी जगह बनाई। छात्रा को महाविद्यालय परिवार की तरफ से बहुत-बहुत बधाई।

_'हिंदी के बढ़ते कदम' विषय पर भाषण प्रतियोगिता

महाविद्यालय में हिंदी दिवस उल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर 'हिंदी के बढ़ते कदम' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 20 छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला और विशिष्ट अतिथि के रूप में पी0 सी0 सी0 ए0 आई0 के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेंद्र लोहिया उपस्थित रहे। महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कहा कि हिंदी देश की एकता की भाषा है। यह एक वैज्ञानिक भाषा है। इस भाषा में हम अपनी भावनाएँ जितनी सहूलियत और अपनेपन से व्यक्त करते है, उतना अन्य किसी भाषा में व्यक्त नहीं कर पाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी आज प्रत्येक क्षेत्र में फल-फूल रही है और प्रतिदिन इसका महत्त्व बढ़ता जा रहा है। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के दिशा निर्देशन में हुआ। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संगीता शर्मा बी0एस0सी0 द्वितीय वर्ष, द्वितीय स्थान वंशिका गौड़, बी0ए0 तृतीय वर्ष, तृतीय स्थान हिमांशी, बी0कॉम प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया।

छात्रा मुनेश व सोनिका का राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में हुआ चयन

जिला स्तरीय एथलेटिक कम्पीटीशन में कुमारी मुनेश व कुमारी सोनिका ने शाट्-पुट व 100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया और राज्य स्तरीय कम्पीटीशन में अपनी जगह बनाई। छात्राओं की इस उपलब्धि पर प्राचार्या ने बधाई दी और छात्राओ के भविष्य की कामना की।

बीसीए विभाग द्वारा पैम्फलेट डिजाइनिंग प्रतियोगिता आयोजित

बीसीए विभाग द्वारा पैम्फलेट डिजाइनिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम हमारे सम्मानित मुख्य अतिथि अशोक बुवानीवाला महासचिव और डॉ. अलका मित्तल प्रिंसिपल की उपस्थिति से शोभायमान हुआ। कार्यक्रम में कुल 35 -40 छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता में पूजा बीसीए द्वितीय वर्ष ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया वहीं कृतिका बीसीए द्वितीय वर्ष द्वितीय व तमन्ना बीसीए द्वितीय वर्ष ने तीसरा स्थान प्राप्त किया वहीं प्रियंका बीसीए तृतीय वर्ष को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नेहरू युवा केंद्र भिवानी व खेल युवा कार्यक्रम मंत्रालय भारत सरकार द्वारा हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शिक्षाविद् डॉ मधु मालती को प्रशस्ति - पत्र देकर सम्मानित किया ।

'पर्यावरण संरक्षण' पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन

एन.जी ओ.स्टैंड विद नेचर एवं महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'पर्यावरण संरक्षण' पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें वाणिज्य विभागाध्यक्षा नीरू चावला ने 'जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए बड़ा खतरा' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस सेमिनार में कॉलेज की 100 से ज्यादा छात्राओं ने स्टैंड विद नेचर की सदस्यता ग्रहण की व जलवायु परिवर्तन के अभियान को गाँव तक ले जाने का निश्चय किया ।

हिंदी दिवस पर वैश्य महाविद्यालय में आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता काव्य - संसार में महाविद्यालय की बीए द्वितीय वर्ष की छात्रा वसुधा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया । बी ए द्वितीय वर्ष की छात्रा ट्विंकल की बेहतरीन प्रस्तुति के लिए उसे 1100 रुपए का नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ । छात्राओं की इस उपलब्धि के लिए महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति तथा प्राचार्या डॉ अलका मित्तल ने विजयी छात्राओं को बधाई देकर उनका उत्साहवर्धन किया।

देवताओं के वाहन का गूढ़ रहस्य

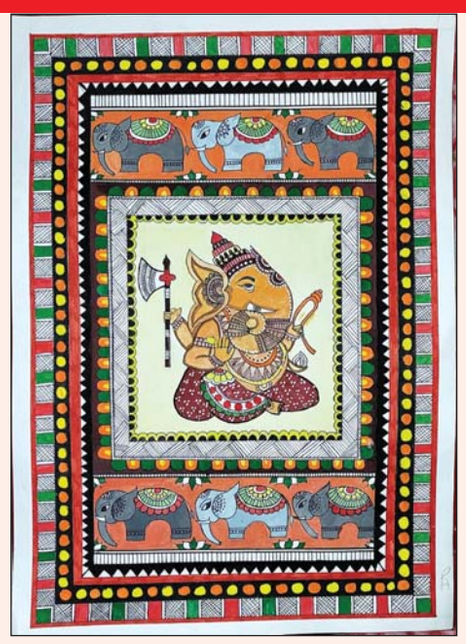

हमारे सनातन धर्म में देवताओं के वाहन का गूढ़ रहस्य छिपा है जो हमें कोई ना कोई संदेश देते हैं जिसे हम नहीं जानते। आज हम उन्हीं के बारे में आप सभी को अवगत कराते हैं:

1. शिवजी का वाहन नंदी: आज हम सभी जानते हैं और देखा भी है कि आज हर शिव मंदिर में नंदी विराजमान है। जिसका एक पैर आगे की ओर है और बाकी तीन मुड़े हुए हैं लेकिन ऐसा क्यों है यह कोई नहीं जानता। नंदी के चार पैर धर्म के चार स्तंभ बताए गए हैं दान, तप, दया और सत्य। आज कलयुग में नंदी के तीन पैर तप, दया और सत्य टूट चुके हैं केवल दान को दर्शाने वाला एक पैर ही आगे है जो दर्शाता है कि कलयुग में केवल दान ही एक मात्र साधन है जिस पर धर्म टिका है क्योंकि आज लोग दान के माध्यम से ही पुण्य कमा रहे हैं और धर्म को आगे बढ़ा रहे हैं क्योंकि आज कलयुग में न तो कोई तप करने वाला रहा, न ही दया करने वाला और न ही सत्य बोलने वाला। अतः नंदी ''धर्म'' का प्रतीक है और शिवजी ''सत्य'' है। इसलिए वह हमेशा नंदी धर्म पर विराजमान रहते हैं। इससे हमें यह संदेश मिलता है कि हमें हमेशा धर्म पर सवार रहना चाहिए और अपने धर्म से गिरना नहीं चाहिए।

2. गणेश जी का वाहन मूषक चूहा: गणेश जी ''बुद्धि'' के देवता है और चूहा है ''तर्क'' का प्रतीक चूहा कभी खाली नहीं बैठता हमेशा कुछ ना कुछ कुतरता रहता है। गणेश जी से हम क्या मांगते हैं ''बुद्धि'' इसलिए जो जितना ज्यादा प्रश्न करेगा, तर्क करेगा वह उतना ही बुद्धिमान होगा। अतः बुद्धि तब बढ़ेगी जब तर्क पर सवार होगी। तात्पर्य यह है कि बुद्धि हमेशा तर्क पर सवार रहती है, इसलिए गणेश जी हमेशा चूहे पर सवार रहते हैं।

3. सरस्वती जी का वाहन हंस: सरस्वती जी ''विद्या'' की देवी है और विद्या बैठी है ''हंस'' पर हंस का स्वभाव ऐसा है कि अगर उसे दूध और पानी मिलाकर दे दिया जाए तो वह दूध पी लेता है और पानी को छोड़ देता है। तो विद्या वही अच्छी है अर्थात विद्वान वही है जो सार को ग्रहण कर ले और असार को उड़ा दे कहने का तात्पर्य यह है कि इस संसार में हर जगह अच्छाई और बुराई दोनों है तो विद्वान वही है जो अच्छा ग्रहण कर ले और बुरा छोड़ दें। विद्वान वही है जो सारग्राही हो। अतः सरस्वती का वाहन हंस इसलिए है क्योंकि वह सार को ग्रहण करता है और सरस्वती मतलब विद्या वही ज्ञेष्ठ है जो सार को ग्रहण करने वाली हो।

4. दुर्गा मां का वाहन शेर: दुर्गा मां शेर पर विराजमान है और शेर जंगल का राजा कहलाता है और वह उसकी सवारी करती है। दुर्गा मां की 8 भुजाएं हैं क्योंकि हम सनातनी चार भाई हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों की भुजाओं को मिलाकर 8 भुजाएं बनती है। इसलिए दुर्गा मां की 8 भुजाएं इस बात की प्रतीक है कि जिस दिन हम सनातनी एक हो जाएंगे तो हम शेर की सवारी भी कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर हम मिलकर रहे एक होकर रहे तो हम किसी का भी मुकाबला कर सकते हैं। अतः दुर्गा मां हमें इस बात का संदेश देती है कि हमें संगठित होकर रहना चाहिए।

आयुषी
(बीकॉम द्वितीय वर्ष)

हिंदी दिवस

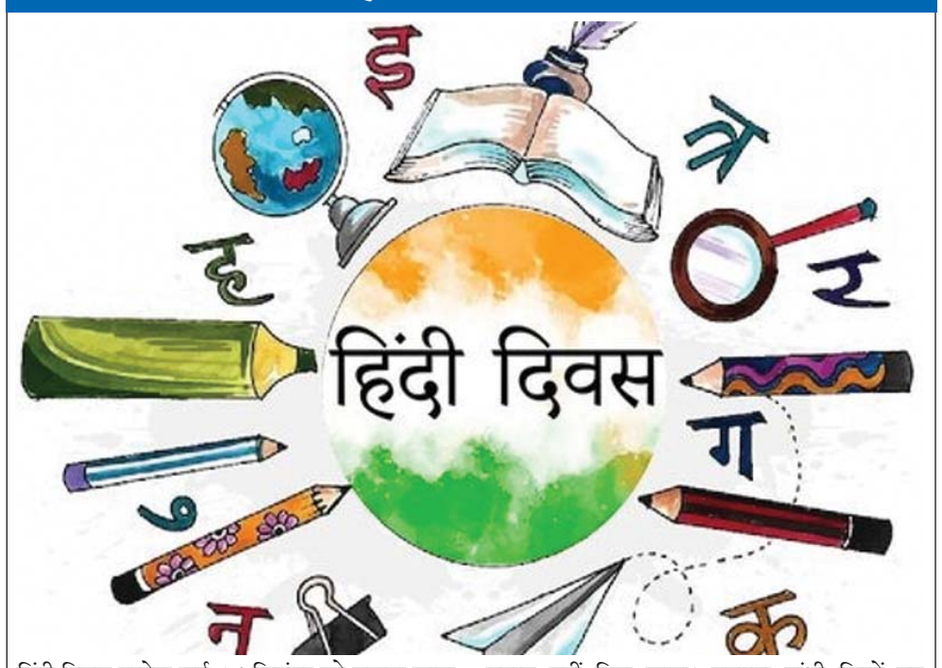

हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। इसी दिन भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर सन् 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को भारत की अधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिंदी दिवस को मनाने के पीछे सबसे बड़ा कारण यह भी है कि आधुनिक समय में अंग्रेजी भाषा का चलन बढ़ने के कारण हिंदी भाषा बोलने वालों की संख्या कम हो गई है। अब हर क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है और हिंदी भाषा को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता। महात्मा गांधी जिन्हें हम राष्ट्रपिता के रूप में जानते है उन्होंने हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा कहा है। इस दिन स्कूलों, कॉलेज और ऑफिस में कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। हिंदी दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति उन सभी लोगों को सम्मानित करते है जिन्होंने हिंदी भाषा के किसी क्षेत्र में उपलब्धि हासिल की है। यह दिन हमें याद दिलाने का एक छोटा-सा प्रयास है कि हिंदी हमारी अधिकारिक भाषा है और अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

हिंदी मेरा ईमान हैं, हिंदी मेरी पहचान हैं,
हिन्दू हूँ मैं, वतन भी मेरा प्यारा हिंदुस्तान है।

...**अनामिका** (बी0कॉम प्रथम वर्ष)

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

यह त्यौहार भाद्रपद महिने के अंधेरे पखवाड़े के आठवें दिन मनाया जाता है, जो अगस्त या सितंबर में पड़ता है। इस दिन कृष्ण मंदिरों के फूलों, रोशनी और अन्य उत्सव की वस्तुओं से सजाया जाता है। भक्त उपवास करते हैं और कृष्ण से प्रार्थना करते हैं। कई भक्त उनके जन्म का जश्न मनाने के लिए पूरी रात जागते है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि श्री कृष्ण का जन्म आधी रात को हुआ था। कृष्ण जन्माष्टमी मनाने के कई अलग- अलग तरीके हैं। कुछ लोग ऐसे ग्रंथ पढ़ते हैं जो कृष्ण के जीवन की कहानी बताते है तो कई लोग उनकी प्रशंसा में कृष्ण भजन गाते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में कृष्ण-लीला करने या कृष्ण के जन्म की कहानी को नाटक के माध्यम से प्रदर्शित करने की भी परंपरा है। कृष्ण जन्माष्टमी पर एक लोकप्रिय परंपरा दही-हांडी या मटकी फोड़ है, यानी दूध और दही से भरे मिट्टी के बर्तन को फोड़ना यह बुराई के विनाश के प्रतीक के रूप में किया जाता है। यह भगवान के प्रति भक्त के प्रेम का भी एक कार्य है कृष्ण अपने शरारती बचपन के लिए जाने जाते हैं। एक अन्य परंपरा किसी गरीब को खाना खिलाना या किसी आश्रय स्थल को भोजन दान करना है।

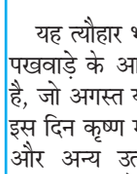

...**ममता**(बी0ए0 द्वितीय वर्ष)

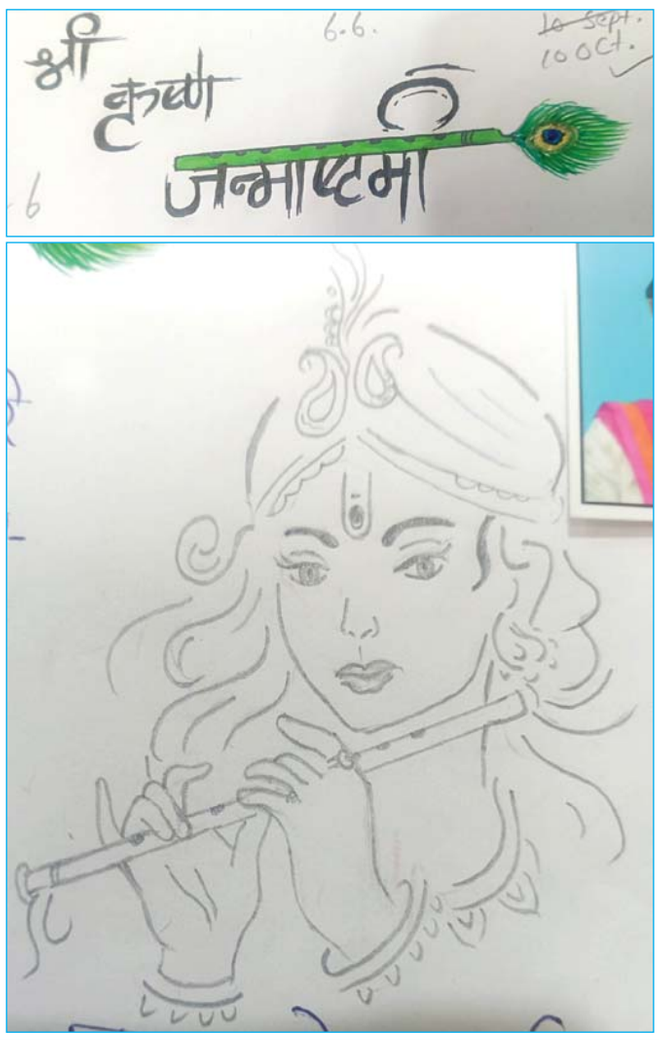

कृष्ण जन्माष्टमी : कन्हैया हमारे सबसे अच्छे साथी है वे हमारा साथ कभी नहीं छोड़ते

कृष्ण जन्माष्टमी का त्योहार हाल ही में आया था संपूर्ण भारतदेश में इसे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । ये त्यौहार क्यों मनाया जाता है? ये मैं आपको इस लेखन में अपने शब्दों में बताऊंगी। हिंदू ग्रन्थों के अनुसार मथुरा राज्य में कंश नामक राजा ने सभी लोगों को बहोत ही पीड़ित कर रखा था वह अत्यधिक दुराचारी व पापी था उसका अंत करने के लिए भगवान विष्णु ने कंश की बहन देवकी की आठतीं संतान के रूप में जन्म लिया उनका जन्म भाद्रपद की अष्टमी को आधी रात को हुआ कंश उन्हें मारना चाहता था क्योंकि उसे स्वर्ग से हुई भविष्यवाणी में बताया गया था कि उसका अंत देवकी का आठवां पुत्र करेगा। कंश कृष्ण का वध न कर दे उस डर से देवकी के पति वासुदेव ने उन्हें अपने मित्र गोकुल के वासी नंद को सौंप दिया और उनकी पुत्री को अपने साथ मथुरा ले गए पौराणिक ग्रंथों में ऐसा माना जाता है कि कृष्ण भगवान ने माया करके सभी द्वारपालों को सुला दिया था व कारागार अपने आप खुल गए थे। यमुना नदी ने भी वासुदेव को मार्ग दिया था। गोकुल पहुँचने में अतः कृष्ण का गोकुल में पालन-पोषण हुआ था। भगवान श्री कृष्ण के जन्मोदिवस को जन्माष्टमी कहा जाता है। इस दिन हम व्रत करते है कई लोग श्री कृष्ण के जन्म स्थान के दर्शन के लिए जाते है कोई अपने घर में ही अपने लड्डु गोपाल जो छोटे बाल कृष्ण का स्वरूप है उन्हें सजाते है झूले पर बिठाकर झूला झूलते है पंचामृत, फल, मक्खन-मिश्री

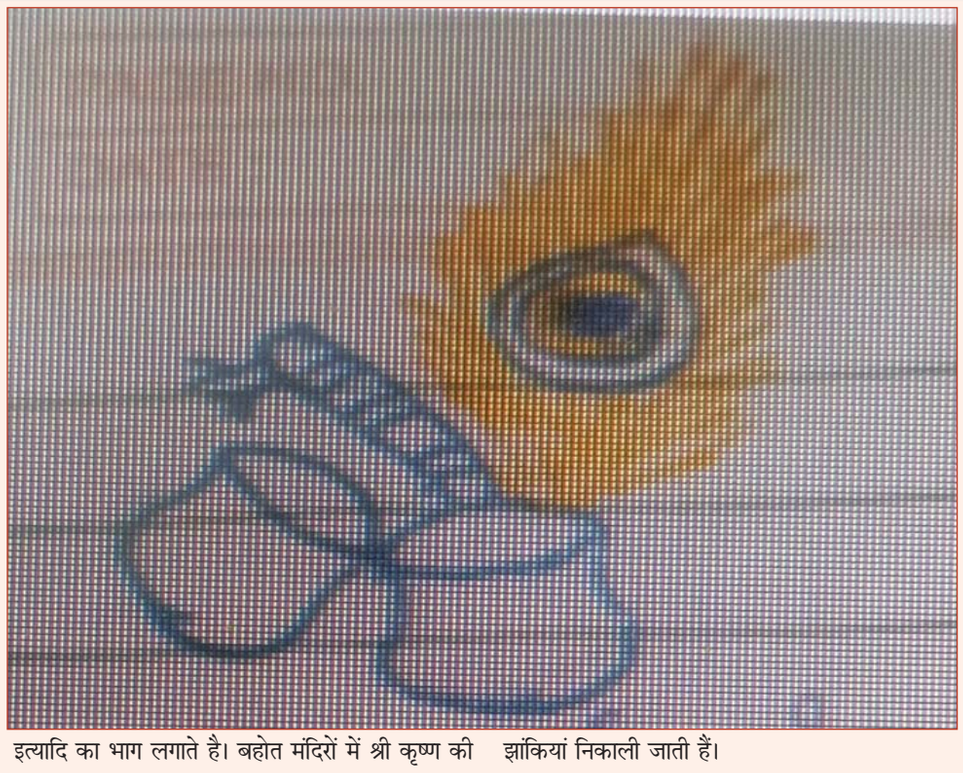

इत्यादि का भाग लगाते है। बहोत मंदिरों में श्री कृष्ण की झांकियां निकाली जाती हैं।

आज के समय में तो विद्यालयों में भी जन्माष्टमी के पर्व को मनाया जाता है ताकि विद्यार्थी अपनी संस्कृति को समझ सकें। महाराष्ट्र में तो दही-हांडी की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। हांडी को दूध-दही, मक्खन-मिश्री से भरा जाता है व गली-मोहल्ले के बच्चे एक-दूसरे के ऊपर चढ़कर उसको फोड़कर त्योहार को मनाते है। आजकल तो यह प्रतियोगिता हर जगह होती है। कृष्ण हमारे लिए सब कुछ है वो एक आइना है हम उन्हें जिस रूप में देखना चाहते है वो हमें वैसे ही दिखते है जैसे कि हम उन्हें बच्चे के रूप में देखना चाहे तो वो हमें नटखट बाल गोपाल दिखते है। प्रेमी के रूप में देखना चाहे तो वो हमें वैसे दिखते है व प्रेम का महत्त्व व सच्चे प्रेम की परिभाषा बताते है सखा के रूप में देखना चाहे तो वो हमारी द्रोपदी की तरह हमारी भी सहायता करते है। गुरु के रूप में देखें तो वो हमें गीता जैसा ज्ञान देते है। भगवान के रूप में देखें तो वो मीरा की तरह हमें अपनी शरण में ले लेते है। हम उन्हें जैसा देखना चाहते है वो हमें वैसे ही दिखते है। हमारे कृष्ण तो सबके है सबसे पहले वो हमारे सबसे अच्छे साथी है जो हमारा साथ कभी नहीं छोड़ते इसी के साथ आप सभी को राधे कृष्ण।

.....**रोशनी**

The Foremost Engineer And The Maker Of Modern Mysore

Sir Mokshagundam Visvesvaraya is one of the foremost engineer whose birthday. 15 September celebrated every year as Engineer's Day in India, Sri Lanka and Tanzania.

Career Timeline:-

>> Assistant Engineer in Bombay, 1885

>>Assistant Superintending Engineer, Pune, 1897-1899; visited China and Japan, 1898.

>>Executive Engineer for Irrigation, Pune, 1899.

>>Sanitary Engineer, Bombay and member, Sanitary Board, 1901/

>>Superintending Engineer, 1907; visited Egypt, Canada, the United States and Russia 1908.

>>Chief Engineer and Secretary to Government of Mysore, 1909.

>>Served as 19th Dewan of Mysore from 1912 to 1918.

>>Director of Tata Steel for 27 years fro 1927 to 1955.

Projects built by Mokshagundam Visvesvaraya:-

Krishnarajasagar Dam, Mysore Sandal Oil and Soap factory, Bhadravati Iron and Steel Company etc.

Block System:- He designed and constructed a new system of Irrigation known as Block System.

Awards:- For his services to the kingdom of Mysore and Republic of India, he was awarded the "Bharta Ratna" by the Government of India 1955.

Authored Books:

>>Memories of My Working Life.

>>Planned Economy for India.

>>Reconstructing India

...Neha(M.Sc.-I (Math)

International Democracy Day

Democracy, from the two Greek words 'demos' that means a citizen of a city state and 'Kratos' that means 'power' or 'rule' form of government, is a core value of United Nations where respect for human rights and fundamental freedoms and the principle of holding periodic and genuine elections by universal suffrage are some of the essential elements of democracy. It refers to a system where the citizens of a country have the power to elect their leaders and exercise their right to participate in decision making processes. So to promote and uphold these principle of democracy worldwide, the United Nations General Assembly established international day of democracy in 2007. Every year on September 15th, the international community comes together to celebrate international democracy day. This day owes its existence to the universal declaration on democracy which was adopted on September 15, 1997 by the Inter- Parliamentary Union (IPU), which is an international organization of national parliaments. Qatar was the one who red efforts to promote this day. Finally, on Nov 8,2007 the day was established as the UNGA adopted by consensus the resolution titled "Support by UN system of efforts of governments to promote a new or restored democracies.

In the words of UN "International Day of Democracy provides an opportunity to review the state of democracy in the world. "This day recongnizes the significance of democracy as a universal value that binds people together in the pursuit of peace, justice and equality.

This day is an opportunity for the world to reflect on the importance of democratic values and the ongoing work needed to strengthen and defend them. It serves as a reminder that democracy is a continuous process that requires active engagement from citizens, leaders and international organizations. We can work towards a more just, equitable and democratic world for all.

Vanshika Gaur
B.A III

जतिन कुमार दास एक महान क्रांतिकारी

जतिन दास का जन्म 27 अक्टुबर 1904 को कलकता में हुआ था। वह क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति से जुड़ गये। उन्हांने 1921 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग अंदोलन में भी भाग लिया। कलकता के विद्यासागर कॉलेज में एक छात्र के रूप् में दास को सरकार विरोधी गातिविधियाँ के लिए पुलिस ने गिरफतार कर लिया था। जतिन दास को गिरफतार किया गया (14 जून 1929) इतिहास में यह दिन क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी जतीनद्र नाथ दास, जिन्हे जतिन दास के नाम से भी जाना जाता है को 14 जून 1929 को लाहौर पड़यँत्र केस के सिलसिले में अग्रेजी ने गिरफतार कर लिया था। 63 दिनो की भूख हड़ताल के बाद जेल में उनका निधन हो गया। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। और इसलिए, यूपीएससी परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। उन्हे मैममन सिंह सेंट्रल जेल में रखा गया था। जेल में बंद रहते हुए, उन्होने कैदियों के साथ खराब व्यवहार के विरोध में भुख हड़ताल शुरू कर दी। 20 दिंनो की हड़ताल के बाद जेल अधीक्षक ने माफी माँगी और दास ने अपना अनशन वापस ले लिया। एक बार जब वह रिहा हुए, तो वह हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संपर्क में आए और बम बनाना सीखा। लाहौर पड़यंत्र केस में पुलिस अधिकारी जेपी साँनर्डस की हत्या के बाद भगत सिंह और सहित कई युवा क्रांतिकारियों को गिरफतार किया गया था। बेहतर इलाज की माँग को लेकर क्रांतिकारी (जेपी) ने लाहौर जेल में भुख हड़ताल शुरू कर दी वे चाहते थे कि उनके साथ राजनीतिक कैदियों जैसा व्यवहार किया जाए और बेहतर एवं स्वास्यकर स्थिति की मांग की जाए। जतिन दास ने 63 दिंनो तक भुख हड़ताल जारी रखी जब उनकी हालत बिगड़ी तो जेल अधिकारियों ने सरकार से उनकी रिहाई की सिफारिश को लेकिन सरकार ने इसे खारिज कर दिया और कहा कि उन्हें जमानत पर रिहा किया जा सकता है। 63 वें दिन 13 सिंतबर 1929 को दास ने दम तोड़ दिया और जेल में ही उनकी मृत्यु हो गयी। दास की मृत्यु के बाद देश मे व्यापक विरोध प्रदर्शन हुआ। पंजाब विधान सभा के दो भारतीय सदस्यो ने इस्तीफा दे दिया। और मोतीलाल नेहरू ने केंद्रीय विधान सभा में स्थगात प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव 47 के मुकाबले 55 वोटो से पारित हो गया।

....**सुजीता**

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस हर साल 5 सितंबर को मनाय जाता है। यह दिन शिक्षा के महत्व और शिक्षको को सम्मानित करने के लिए आयोजित किया जाता है। इस दिन के माध्यम से हम सभी शिक्षकों को उनके महत्वपूर्ण कार्यो के लिए धन्यवाद देते है। शिक्षक दिवस का प्रारम्भ 1962 मे हुआ था, जब भारतीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण जी का जन्मदिन मनाने के लिए इसे चुना गया। डॉ. राधाकृष्ण जी एक मान्यता प्राप्त शिक्षाविद् थे और उन्होने शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिक्षक दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के महत्व को समझाना है। शिक्षक हमारे जीवन में मार्गदर्शन करते है, हमें सही और गलत के बीच अंतर समझाते है और महें जीवन का मूल मंत्र सिखाते है। शिक्षक उस सड़क के समान है जो खुद तो वही रहता है लेकिन दूसरो को अपनी मंजिलो तक पहुँचा देता है। शिक्षक हमें केवल ज्ञान ही देते अपितु उनके जीवन में आए उतार-चढ़ाव से भी अवगत कराते है। शिक्षक की डाँट भी अमृत-तुल्य होती है क्योकि वही वस्तु 'सोना' बनती है जिसे सुनार तपाता है। आज का युग डिजिटलाइस हो चुका है। अब कंम्प्यूटर और रोबोटो के माध्यम से बच्चो को पढ़ाया जाता है, लेकिन आप ही बताइए कि क्या किसी मशीन में इतना सामर्ध्य है कि वो मानव शिक्षको का स्थान ले सकें ? मैं जानती हूँ कि आपका उतर भी नही होगा। अंतः अपने लेख को समापन की तरफ ले जाते हुए मै बस इतना ही कहना चाहूँगी

'गुरू गोबिंद दोऊ खड़े काके लागु पाएँ
बलिहारी गुरू आपने जिन गोबिंद दियो मिलाए'।

...**हिमांशी, बी.कॉम**

राव तुलाराम : स्वतंत्रता सेनानी

राव तुलाराम सिंह 1857 को प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओ में से एक थे। उन्हे हरियाणा राज्य मे 'राज नायक' माना जाता है। इनका जन्म हरियाणा राज्य के रेवाड़ी शहर में एक यदवंशी (अहीर) परिवार में 09 दिसंबर 1825 को हुआ । इनके पिता का नाम राव पूरन सिंह तथा माता का नाम राजी ज्ञान कुवँर था। इनके दादा का नाम राव तेजसिंह था। 1857 की क्रांति में राव तुलाराम ने खुद को स्वतंत्र घोषित करते हुए राजा की उपाधि धारण कर ली थी। उन्होन नसीबपुर-नारनौल के मैदान में अंग्रेजो से युद्ध किया जिसमे उनके पाँच हजार से अधिक क्रांतिकारी सैनिक मारे गए थे। उन्होने दिल्ली के क्रांतिकारियो को भी सहयोग दिया व 16 नवम्बर 1857 को स्वयं ब्रिटिश सेना से नसीबपुर-नारनौल में युद्ध किया, और ब्रिटिश सेना को कड़ी टक्कर दी तथा ब्रिटिश सेना के कमांडर जेराई और कप्तान वालेस को मौत के घाट उतार दिया, परन्तु अंत मे उनके सभी क्रातिकारी साथी मारे गए। राव तुलाराम को घायल अवस्था में युद्ध क्षेत्र से हटना पड़ा, वह पराजित हुए पर हिम्मत नही हारी। आगे की लड़ाई की रणनीति तय करने हेतू वह तात्या टोपे से मिलने गए, परन्तु 1862 में तात्य टोपे के बंदी बना जाने के कारण सैनिक सहायता माँगने ईरान व अफगानिस्तान चले गए जहाँ अल्पारा में उनबी मृत्यु हो गयी। 1857 की क्रांति में भागीदारी के कारण ब्रिटिश हुकूमत ने 1859 में, राव तुलाराम की रियासत को जब्त कर लिया था। परन्तु उनकी दोनो पत्नियो का संम्पति पर अधिकार कायम रखा गया था। 1877 में उनकी उपाधि उनके पुत्र राव युधिष्ठिर सिंह का अहिरवाल का मुखिया पदस्थ करके लौटा दी गयी।

बेटी दिवस

एक मीठी सी मुस्कान है बेटी यह सच है कि मेहमान है बेटी उस घर की पहचान बनने चली जिस घर से अनजान है बेटी

मेरी इन पंक्तियों को पढ़कर आपको अंदाजा लग गया होगा कि आज मै आपके साथ किस विषय पर चर्चा करने वाली हूँ

ळम बात करने वाले है बेटी के बारे मे। भारत और दुनिया के कई देशो मे बेटियों को सम्मान देने के लिए प्रति वर्ष सितम्बर महीने के चौथे रविवार को राष्ट्रीय बेटी दिवस मनाया जाता है।

बेटी दिवस की आवश्यकता ?

समाज में फैली बुराईयों-भ्रूण हत्याए घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा व उनके साथ होने वाले दुष्कर्म को रोकना और लोगो को बेटियों के प्रति जागरुक करना आवश्यक है इसलिए बेटियों को सम्मान देने के लिए बेटी दिवस मनाया जाता है

कैसे दिया जाए बेटियो को सम्मान

इस उद्देश्य से एक विशेष दिन बेटियों को समर्पित किया गया है। इस दिन माता-पिता अपनी बेटी के प्रति प्रशंसा व्यक्त करते है और उन्हे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है हमे न केवल अपनी बेटी बल्कि अन्य लड़कियों को भी सम्मान और सुरक्षा देनी चाहिए।

निष्कर्ष आज बेटिया चाँद तक पहुंच गई है कोई भी क्षेत्र बेटियो से अछूता नही है। बेटियों ने पूरी दुनिया को अपना दमखम दिखा दिया है और बता दिया है कि वे किसी से कम नही है।

.....**मुस्कान**

भारत के राष्ट्र कवि रामधारी सिंह

रामधारी सिंह को हम दिनकर के नाम से भी जानते है। रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के प्रसिद्ध कवि, लेखक थे। उनका जन्म 23 सितंबर 1908 मे बिहार मे हुआ था। उनके पिता का नाम रवि सिंह और उनकी माता का नाम मनरूप देवी था। दिनकर के पिता किसान थे जब दिनकर 2 वर्ष के थे जब उनके पिता का निधन हो गया। उनका व उनके भाई बहनों को पालन-पोषण उनकी विधवा मॉ ने किया था। दिनकर का पहला काव्य संग्रह 'विजय संदेश' वर्ष 1928 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद उन्होंने कई रचनाएं की। दिनकर आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप मे स्थापित है उनकी कविताओं ने लोगो को आजादी में जागरुक किया तथा एक नया जोष भरा।

''है बड़ी बात आजादी का पाना ही जुगाना भी
बलि एक बार ही नही उसे पड़ता फिर-फिर दुहराना भी''

डनकी प्रसिद्ध रचनाएं- उर्वशी, रश्मिरथी, रेणुका, कुरुक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय, हुंकार, सामधेनी, नीम के पते है। भाषा शैली- दिनकर जी की भाषा भावो के अनुकूल परिवर्तनशील है। वे अपने साहित्य मे खड़ी बोली का प्रयोग करते थे। उन्होंने तत्सम शब्दों का भी सफलतापूर्वक प्रयोग किया। कही-कही उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का भी उपयोग किया गया है जिससे उनकी भाषा और भी प्रभाहमयी हो गयी है। 1959 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 1968 को उन्हे राजस्थान विद्यापीठ द्वारा साहित्य चूड़ामणि से सम्मानित किया गया था। दिनकर जी का निधन 24 अप्रैल 1974 को बिहार मे हुआ था। 30 सितंबर 1987 को उनकी 79 वीं जयंती के अवसर पर, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

भारत का एक महत्वाकांक्षी चंद्र मिशन है 'चंद्रयान-3'

'चंद्रयान-3 भारत का एक महत्वाकांक्षी चंद्र मिशन है। 24 अगस्त, 2023 को इसरो के नवीनतम अपडेट के अनुसार, चंद्रयान 3 रोवर प्रज्ञान लैंडर से नीचे उतर गया है और भारत ने चंद्रमा पर सैर की है! भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला पहला देश है। चंद्रयान-3 चाँद की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करने का भारत का दूसरा प्रयास था। यह मिशन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO Indian Space Research Organisation) (ISRO Indian Space Research Organisati द्वारा 14 जुलाई, 2023 को 2.35 आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा के स्पेस सेंटर से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया और करीब दो हफ़्ते बाद, यानी कि, करीब 5 अगस्त को चंद्रयान 3 चन्द्रमा की कक्षा में प्रवेश करेगा। चंद्रयान-3 के मिशन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग का प्रदर्शन करना, चंद्रमा पर रोवर के चलने का प्रदर्शन करना और इन सीटू यानि चाँद की सतह पर ही वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना है। मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, लैंडर में कई उन्नत प्रौद्योगिकियों मौजूद हैं जैसे कि लेजर और आरएफ-आधारित अल्टीमीटर, वेलोसीमीटर, प्रोपल्शन सिस्टम, आदि । ऐसी उन्नत तकनीकों को पृथ्वी की स्थितियों में सफलतापूर्वक प्रदर्शित करने के लिए, कई लैंडर विशेष परीक्षण, जैसे इंटीग्रेटेड कोल्ड टेस्ट, इंटीग्रेटेड हॉट टेस्ट और लैंडर लेग मैकेनिज्म प्रदर्शन परीक्षण की योजना बनाई गई है और इसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। चंद्रयान-3 के माध्यम से, भारत का लक्ष्य अपनी तकनीकी कौशल, वैज्ञानिक क्षमताओं और अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करना है। यदि चंद्रयान-3 सफल होता है, तो यह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष समुदाय में भारत की

स्थिति को और मजबूत करेगा। यह मिशन युवा पीढ़ी को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में करियर बनाने के लिए प्रेरित करेगा।

चंद्रयान 3 कैसे काम करेगा?

चंद्रयान 3 भारत का एक महत्वपूर्ण भारतीय अंतरिक्ष मिशन है. चंद्रयान 3 एक मल्टी-पार्ट मिशन है, जिसमें एक ऑर्बिटर, एक लैंडर और एक रोवर शामिल है. ऑर्बिटर चंद्रमा की परिक्रमा करेगा और चंद्रमा की सतह और उसके वातावरण का अध्ययन करेगा. विक्रम लैंडर चंद्रमा की सतह पर उतरेगा और प्रज्ञान रोवर चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग करेगा।

चंद्रयान 3 के लैंडर का नाम क्या है?

चंद्रयान 3 के लैंडर का नाम विक्रम है। यह 1752 किलोग्राम भारी है और 4.5 मीटर लंबा है. लैंडर चंद्रमा की सतह पर उतरेगा और रोवर को छोड़ेगा। रोवर चंद्रमा की सतह पर वैज्ञानिक प्रयोग करेगा।

चंद्रयान 3 के रोवर का नाम प्रज्ञान है. यह 26 किलोग्राम

चंद्रयान 3 के रोवर का नाम क्या है? भारी है और 6.5 मीटर लंबा है. प्रज्ञान लैंडर से अलग होकर चंद्रमा की सतह पर चलेगा।

चंद्रयान 3 चांद पर कब पहुंचेगा?

चंद्रयान- 3 23 अगस्त 2023 को 18:04 बजे चांद के साउथ पोल पर चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग हो गई है।

शास्त्रीय संगीत व नृत्य अध्यात्म से जुड़ने का सरल माध्यम : डॉ0 साक्षी

कथक प्राचीन भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली मुख्यत कथा वाचन शैली पर आधारित है। यह हमारी भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत है। इससे जुड़कर छात्राएं न केवल अपनी संस्कृति से जुडेंगी अपितु उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास होगा और उनमे आत्मविश्वास बढ़ेगा। यह उद्गार आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित 10 दिवसीय कथक नृत्य कार्यशाला में दिल्ली से आई अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षिका डॉ0 साक्षी शर्मा (दूरदर्शन कलाकार) ने कहे। उन्होंने कथक नृत्य शैली के बारे में बताया कि इसके तकनीकी पक्ष में तत्कार लय, ताल की जानकारी के साथ, हस्तक, तीन ताल में तोड़ें व तिहाईयां सिखाई जाती है। यह शारीरिक नियंत्रण एवं धैर्य की कला है। कथक कला में दृष्टि भेद, हस्त, ग्रीवा संचालन व सांसों पर नियंत्रण रखना भी सिखाया जाता है।

पूर्वांशी – लगातार पढ़ाई करते रहने से मुझे गर्दन में दर्द था जो इस नृत्य शैली की मुद्राओं के माध्यम से दूर हो गया।

पदमा– अन्य नृत्य शैलियों से केवल खुशी मिलती है लेकिन कथक नृत्य शैली से हमें आनंद मिला है और भक्ति की भावना उत्पन्न हुई है।

चित्राक्षी– नृत्य के माध्यम से हमारे अंदर अलग प्रकार की ऊर्जा का संचार हुआ और हमने योग की मुद्राएं भी सीखी।

संगीता– हम पहले केवल पाश्चात्य नृत्य को ही जानते थे लेकिन कथक नृत्य कार्यशाला के माध्यम से अपनी संस्कृति से जुड़ने का अवसर मिला।

साक्षी– कथक नृत्य से हमारे व्यक्तित्व में निखार आया और हमने अनुशासन में रहना सीखा।

कार्यशाला का आयोजन महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल के दिशानिर्देशन व निर्देशिका डॉ0 अरुणा सचदेव के सानिध्य में संगीत विभाग द्वारा किया जा रहा है। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने बताया कि आज के व्यस्तता भरे जीवन में अपने लिए समय निकालना नितांत आवश्यक है। आज की गलाकाट प्रतियोगिता एवं तकनीकी क्रांति के युग में प्रत्येक मनुष्य तनावग्रस्त है और युवा वर्ग में पाश्चात्य संस्कृति का बोल-बाला है। युवा वर्ग अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भूलता जा रहा है। छात्राओं को भारतीय संस्कृति से जोड़ने के लिए महाविद्यलाय ने 10 दिवसीय नृत्य कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। निर्देशिका डॉ0 अरुणा सचदेव ने संगीत को परिभाषित करते हुए बताया कि संगीत गायन, वादन व नृत्य तीनों के मेल से पूरा होता है। जिसमें समय का उचित तालमेल होना आवश्यक है। संगीत की ताल एकगुण, दोगुण व चैगुण के समावेश के बिना नृत्य अधुरा है। उन्होंने यह भी कहा कि संगीत में ही भगवान

का निवास है। कार्यशाला में न केवल छात्राएं पूरी लग्न व जोर-शोर के साथ भागीदारी स्थापित कर रही है अपितु महाविद्यालय का शिक्षक एवं गैर-शिक्षक वर्ग भी बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है।

शारीरिक व मानसिक संतुलन की विधा-कथक नृत्यः डॉ. अलका मित्तल

भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत कथक नृत्य ईशवरीय साधना का सबसे सरल मार्ग प्रस्तुत करता है। कथक नृत्य शारीरिक मानसिक संतुलन की अद्वितीय कला है यह उदगार आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित 10 दिवसीय कार्यशाला के समापन समारोह में बतौर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्या अलका मित्तल ने कहे। उन्होने कहा की नृत्य हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है और इसके द्वारा हम भारतीय संस्कृति को पहचानते है। उन्होने यह भी कहा कि कथक नृत्य हमारे शरीर के प्रत्येक अंग को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने की कला प्रदान करता है।

कार्यशाला का आयोजन प्राचार्या के मार्गदर्शन में निर्देशिका डा0 अरूणा सचदेव के दिशा निर्देशन में संगीत विभाग द्वारा किया गया। कार्यशाला में अंतरराष्ट्रीय कलाकार साक्षी शर्मा प्रशिक्षका रही। कार्यशाला का समापन समारोह अनीता नाथ अध्यक्ष सांस्कृतिक मंच भिवानी, जगत नारायण, शशि परमार की उपस्थिती में हुआ। निर्देशिका ने बताया कि महाविद्यालय में छात्राए इस कार्यशाला से अत्यधिक प्रभावित रही। 150 से अधिक छात्राओं ने पंजीकरण करवाया। सभी छात्राओं ने बड़े ही चाव व उत्साह से कथक नृत्य शैली को न केवल सिखा अपितु समापन समारोह में अपनी अद्भुत प्रस्तुति भी दी। जिसमें भक्ति भाव से ओत-प्रोत गुरु वंदना, तोडे, तुकडे. तिहाईयाँ व गत भाव प्रमुख रही। इस अवसर पर उन्होने यह भी कहा कि इस नृत्य शैली से छात्राओं में अनुशासन व आत्मविश्वास का संचार हुआ।

बतौर प्रशिक्षिका अन्तरराष्ट्रीय कलाकार साक्षी शर्मा ने भी समापन समारोह में अदभुत कथक नृत्य, भक्ति रस से ओत-प्रोत शिव स्तुति, कथक का तकनीकि ताल पक्ष 17 मात्रा, राधा कृष्ण की छेड़छाड़ 'कान्हा गिरधरी मेरो मग रोकत' पर प्रस्तुतीया दी। जिस पर सभागार मंत्रमुगघ हो गया।

उन्होने बताया कि 10 दिवसीय कार्यशाला में छात्राओं ने ताल पक्ष, हस्तक क्रिया, चक्रो पर आधारित बंदिश को बड़े ही लगन व अनुशासित तरीके से सिखा। समापन समारोह में छात्रा कल्याणी ने प्रशिक्षिका का छाया चित्र स्वयं बनाकर उन्हें भेंट किया जिससे वह भाव विभोर हो गई। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय कलाकार विश्वदीप शर्मा द्वारा भी अद्भुत प्रस्तुतियाँ दी गई। जिसमें घुंघरू ध्वनि द्वारा रेल संचालन ध्वनी प्रस्तुति प्रमुख रही। इस अवसर पर संगीत विभाग से डा0 रचना कौशिक, डा0 रितु रानी, उषा गोस्वामी, केशव कौशिक के साथ महाविद्यालय का समस्त शिक्षक वर्ग उपस्थित रहा।

समाजिक अंधप्रथाएँ– दहेज प्रथा

देवांशी एक बड़ी सीधी-साधी, भोली और सुशील कन्या थी। उसने अपने जीवन के बीस साल माता-पिता की सेवा और पढ़ाई करने में लगा दिए। अब उसके माता-पिता को उसकी शादी की चिंता सताने लगी। वे आर्थिक रूप् से इतने सशक्त तो नहीं थे, परंतु वे चाहते थे कि उनकी बेटी की शादी में कोई कमी न आए। शादी करने की बात रिश्तेदारों-संबंधियों तक पहुँचानी है। उधर देवांशी का मन एक वकील बनने को करता है, जिसके लिए उसे केवल लॉ की परीक्षा ही देनी है परंतु उसके पिता इसके विरोध में हैं क्योंकि उनका मानना है कि जो लड़कियाँ वकालत करती हैं, उनके घर बसते नहीं हैं। इसी बीच लड़की के मामा का फोन आता है और वे बताते हैं कि उन्होंने देवांशी के लिए एक संपन्न परिवार का योग्य बेटा गणेश ढूंढा है। वह दिल्ली में एक मल्टी नेशनल कंपनी में कार्यरत था। रविवार को दोनों परिवारों की मुलाकात होती है। गणेश के माता-पिता को देवांशी पसंद आ जाती है। वे गणेश और देवांशी की शादी के लिए तैयार हो जाते है। जब देवांशी के पिता उनसे पूछते हैं कि उन्हें उपहार में क्या चाहिए तो गणेश के माता-पिता कहते है- 'हम दहेज के सख्त खिलाफ है।' देवांशी और उसके माता-पिता बहुत खुश हो जाते है। 15 दिनों के बाद सोमवार को शादी तय हो जाती है। उनकी शादी बड़े धूमधाम से होती है। शादी के बस दो महीने ही होते हैं कि गणेश के मोहल्ले में सिमरन नाम की बहू आती है जो अपने साथ एक महंगी गाड़ी और 50 लाख नकद रूपये लाती है। यह देखकर गणेश के माता-पिता के मन में लालच आ जाता है और वे देवांशी को बुलाकर कहते हैं- 'जा, अपने मां-बाप से 25 लाख रूपये लेकर आ।' देवांशी जवाब देती है कि उसके मां-बाप के पास इतना धन नहीं है। तभी गणेश भी वहां आ जाता है और सारी सुनकर देवांशी को पीटने लग जाता है। यह सिलसिला कई दिनों तक चलता है। फिर एक दिन गणेश की माँ देवांशी पर मिट्टी का तेल डाल देती है और गणेश को माचिस की डिब्बी थमा देती है। गणेश ने देवांशी को आग के हवाले कर दिया। बस 15 ही होते हैं कि देवांशी का भाई कार्तिक वहाँ आ जाता है और कड़ी मशकत के बाद उसे बचा लेता है। वह उसे डॉक्टर के पास ले जाता है। डॉक्टर कहते हैं कि देवांशी के पैर 90 प्रतिशत जल चुके हैं और अब यह अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पाएगी। कार्तिक घटना का सारा विवरण कोर्ट में जाकर दे देता है और अपने माता-पिता को भी इसके बारे में सूचित करता है। फैसले के एक दिन पहले देवांशी अपने माता-पिता के साथ बैठी हुई होती है। तभी उसके घर में चार आदमी आते हैं और कहते हैं- 'तुम अपना केस वापिस ले लो, वरना तुम्हारे साथ अच्छा नहीं होगा।' देवांशी मना कर देती है और तभी उनमें से एक आदमी देवांशी की तरफ बंदूक कर देता है। वह बस बंदूक चलाने ही वाला होता है कि कार्तिक वहाँ आ जाता है और उन चारों को खूब पीटता है। अगले दिन कोर्ट में दोनों परिवार जाते हैं और फैसला देवांशी के हित में सुनाया जाता है। गणेश और उसके परिवार पर दहेज लेने व देवांशी की हत्या करने की कोशिश के अपराध में सजा सुनाई जाती है। देवांशी अपने पिता के कहने पर लॉ की परीक्षा देती है और अच्छे अंकों से पास कर एक प्रसिद्ध वकील बन जाती है। वह उन महिलाओं का मुफ्त में केस लड़ती है जो दहेज से पीड़ित हैं। दहेज-प्रथा ने भले ही देवांशी के दोनों पैर छिन लिए हो, परंतु उसकी मनोशक्ति को कोई खत्म नहीं कर सकता है।

...हिमांशी

अनुपमा यात्रा

स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा हरियाणा की आवाज प्रिंटर्स, भिवानी से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है।

प्रबंध सम्पादकः डॉ. अलका मित्तल

मोबाईल नम्बरः 9306940790 **नोटः** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा

Gmail: anupama.express@ammb.ac.in